अध्याय १९

श्री चैतन्य महाप्रभु का अचिन्त्य व्यवहार

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत प्रवाह भाष्य* में इस अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। श्री चैतन्य महाप्रभु प्रतिवर्ष अपनी माता को मिलने के लिए वस्त्र तथा प्रसाद का उपहार देकर जगदानन्द पण्डित को नवद्वीप जाने के लिए कहते थे। ऐसी एक भेंट के बाद जगदानन्द पण्डित अद्वैत आचार्य द्वारा लिखित एक गीत लेकर पुरी लौटे। जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने इसे पढ़ा, तो उनका भाव इतना प्रबल हो गया कि सारे भक्तों को लगा कि महाप्रभु का शीघ्र ही प्रयाण हो जायेगा। महाप्रभु की दशा इतनी गम्भीर थी कि वे रात को दीवाल से अपना मुख रगड़कर रक्तरंजित होने लगे। इसे रोकने के लिए स्वरूप दामोदर ने शंकर पंडित से कहा कि रात में वह महाप्रभु के साथ उसी कमरे में रुक जाय।

इस अध्याय में इसका भी वर्णन हुआ है कि किस तरह वैशाख (अप्रैल-मई) मास की पूर्णिमा के दिन श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ-वल्लभ उद्यान में प्रविष्ट हुए और उन्हें नाना प्रकार के भावों का अनुभव हुआ। भगवान् कृष्ण को एकाएक अशोक वृक्ष के नीचे देखकर प्रेमावेश के कारण महाप्रभु ने आध्यात्मिक उन्माद के विविध लक्षण प्रकट किये।

वन्दे तं कृष्ण-चैतन्यं मातृ-भक्त-शिरोमणिम् ।
प्रलप्य मुख-सङ्घर्षी मधूद्याने ललास यः ॥१॥

वन्दे तं कृष्ण-चैतन्यं मातृ-भक्त-शिरोमणिम् ।
प्रलप्य मुख-सङ्घर्षी मधूद्याने ललास यः ॥ १ ॥

वन्दे—मैं सादर नमस्कार करता हूँ; **तम्**—उनको; **कृष्ण-चैतन्यम्**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मातृ-भक्त**—महान् मातृभक्त; **शिरो-मणिम्**—शिरोमणि; **प्रलप्य**—उन्मत्त की तरह बोलते; **मुख-सङ्घर्षी**—अपना मुख रगड़ते; **मधु-उद्याने**—जगन्नाथ-वल्लभ उद्यान में; **ललास**—आनन्द लिया; **यः**—जो।

अनुवाद

मातृभक्तों के शिरोमणि श्री चैतन्य महाप्रभु उन्मत्त की तरह बोलते तथा दीवालों पर अपना मुख रगड़ते थे। प्रेमावेश से अभिभूत होकर वे कभी-कभी अपनी लीला सम्पन्न करने के लिए जगन्नाथ-वल्लभ उद्यान में चले जाते थे। मैं उन्हें सादर नमस्कार करता हूँ।

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥२॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय—जय जय; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—भगवान् गौरांग के भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत आचार्य की जय हो! तथा चैतन्य महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!

এই-মতে মহাপ্রভু কৃষ্ণ-প্রেমাবেশে ।
উন্মাদ-প্রলাপ করে রাত্রি-দিবসে ॥৩॥

এই-মতে মহাপ্রভু কৃষ্ণ-প্রেমাবেশে ।
উন্মাদ-প্রলাপ করে রাত্রি-দিবসে ॥ ३॥

এই-মতে—इस तरह; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कृष्ण-प्रेम-आवेशे**—कृष्ण-प्रेम के आवेश में; **उन्माद**—उन्मत्त; **प्रलाप**—प्रलाप; **करे**—करते; **रात्रि-दिवसे**—दिन-रात।

अनुवाद

इस तरह कृष्ण-प्रेम के आवेश में श्री चैतन्य महाप्रभु उन्मत्त की तरह व्यवहार करते और रात-दिन पागल की तरह बोलते रहते।

प्रभुर अत्यन्त प्रिय पण्डित-जगदानन्द ।
याहार चरित्रे प्रभु पायेन आनन्द ॥४॥

प्रभुर अत्यन्त प्रिय पण्डित-जगदानन्द ।
याहार चरित्रे प्रभु पायेन आनन्द ॥४॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **अत्यन्त**—अत्यन्त; **प्रिय**—प्रिय; **पण्डित-जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **याहार चरित्रे**—जिनके कार्यकलापों में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पायेन**—पाते; **आनन्द**—बड़ा आनन्द।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित श्री चैतन्य महाप्रभु के अत्यन्त प्रिय भक्त थे। महाप्रभु को उनके कार्यों से अत्यधिक आनन्द मिलता था।

प्रति-वत्सर प्रभु ताँरे पाठान नदीयाते ।
विच्छेद-दुःखिता जानिञ्जननी आश्वासिते ॥५॥

प्रति-वत्सर प्रभु ताँरे पाठान नदीयाते ।
विच्छेद-दुःखिता जानि' जननी आश्वासिते ॥५॥

प्रति-वत्सर—प्रति वर्ष; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उनको; **पाठान**—भेजते; **नदीयाते**—नवद्वीप को; **विच्छेद-दुःखिता जानि'**—विरह के कारण उनका दुःख जानकर; **जननी**—उनकी माता; **आश्वासिते**—सान्त्वना देने के लिए।

अनुवाद

उनके वियोग में अपनी माता को अत्यन्त दुःखी जानकर महाप्रभु जगदानन्द पण्डित को प्रतिवर्ष नवद्वीप भेजा करते कि वे जाकर उन्हें सान्त्वना दें।

"नदीया चलह, माताके कहिह नमस्कार ।
आमार नामे पाद-पद्म धरिह ताँहार ॥६॥

"नदीया चलह, मातारे कहिह नमस्कार ।
आमार नामे पाद-पद्म धरिह ताँहार ॥ ६ ॥

नदीया चलह—नदिया जाओ; **मातारे**—मेरी माता को; **कहिह**—कहना; **नमस्कार**—मेरे नमस्कार; **आमार नामे**—मेरी ओर से; **पाद-पद्म**—चरणकमल; **धरिह**—पकड़कर; **ताँहार**—उनके।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने जगदानन्द पण्डित से कहा, "आप नदिया जाओ और मेरी माता से मेरा नमस्कार कहना। मेरी ओर से उनके चरणकमलों का स्पर्श करना।

কহিহ তাঁহারে—'তুমি করহ স্মরণ ।
নিত্য আসিংআমি তোমার বন্দিয়ে চরণ ॥৭॥
কহিহ তাঁহারে—'তুমি করহ স্মরণ ।
নিত্য আসি' আমি তোমার বন্দিয়ে চরণ ॥ ৭ ॥

কহিহ তাঁহারে—उनसे कहना; **তুমি করহ স্মরণ**—कृपया स्मरण में रखें; **নিত্য আসি'**—हररोज आकर; **আমি**—मैं; **তোমার**—आपके; **বন্দিয়ে চরণ**—चरणकमलों में नमस्कार करता हूँ।

अनुवाद

"मेरी ओर से उनसे कहना, 'कृपया स्मरण रखें कि मैं प्रतिदिन यहाँ आकर आपके चरणकमलों की वन्दना करता हूँ।

যে-দিনে তোমার ইচ্ছা করাইতে ভোজন ।
সে-দিনে আসি' অবশ্য করিয়ে ভক্ষণ ॥৮॥
যে-দিনে তোমার ইচ্ছা করাইতে ভোজন ।
সে-দিনে আসি' অবশ্য করিয়ে ভক্ষণ ॥ ৮ ॥

যে-দিনে—किसी दिन; **তোমার**—आपकी; **ইচ্ছা**—इच्छा; **করাইতে ভোজন**—मुझे भोजन कराने की; **সে-দিনে**—उस दिन; **আসি'**—आकर; **অবশ্য**—निश्चय ही; **করিয়ে ভক্ষণ**—मैं खाता हूँ।

अनुवाद

"'यदि किसी दिन आप मुझे भोजन कराना चाहती हैं, मैं निश्चय ही आकर आप जो कुछ देती हैं, उसे स्वीकार करता हूँ।

তোমার সেবা ছাড়ি' আমি করিলুঁ সন্ন্যাস ।
'বাউল' হঞা আমি কৈলুঁ ধর্ম-নাশ ॥৯॥

তোমার সেবা ছাড়ি' আমি করিলুঁ সন্ন্যাস ।
'বাউল' হঞা আমি কৈলুঁ ধর্ম-নাশ ॥ ৯॥

তোমার সেবা ছাড়ি'—आपकी सेवा छोड़कर; **আমি**—मैंने; **করিলুঁ**—स्वीकार किया है; **সন্ন্যাস**—संन्यास आश्रम; **বাউল হঞা**—उन्मत्त होकर; **আমি**—मैं; **কৈলুঁ**—किया; **ধর্ম-নাশ**—धर्म का नाश।

अनुवाद

"'मैंने आपकी सेवा करना छोड़कर संन्यास व्रत धारण कर लिया है। इस तरह मैं उन्मत्त हो गया हूँ और मैंने धर्म के सिद्धान्तों को नष्ट कर दिया है।

এই অপরাধ তুমি না ল-ইহ আমার ।
তোমার অধীন আমি—পুত্র সে তোমার ॥১০॥

এই অপরাধ তুমি না ল-ইহ আমার ।
তোমার অধীন আমি—পুত্র সে তোমার ॥ ১০॥

এই অপরাধ—यह अपराध; **তুমি**—आप; **না**—नहीं; **ল-ইহ**—लें; **আমার**—मेरा; **তোমার**—आपका; **অধীন**—आश्रित; **আমি**—मैं; **পুত্র**—पुत्र; **সে**—वह; **তোমার**—आपका।

अनुवाद

"'हे माता, कृपया आप इसे अपराध के रूप में न लें, क्योंकि मैं आपका पुत्र हूँ और पूर्णतया आप पर आश्रित हूँ।

নীলাচলে আছি আমি তোমার আজ্ঞাতে ।
যাবজ্জীব, তাবতামি নারিব ছাড়িতে'' ॥১১॥

নীলাচলে আছি আমি তোমার আজ্ঞাতে ।
যাবত্ জীব, তাবতামি নারিব ছাড়িতে" ॥ ১১ ॥

नीलाचले—जगन्नाथ पुरी, नीलाचल; **आछि आमि**—मैं हूँ; **तोमार आज्ञाते**—आपकी आज्ञा के अनुसार; **यावत् जीब**—जब तक मैं जीवित हूँ; **तावत्**—तब तक; **आमि**—मैं; **नारिब**—नहीं; **छाड़िते**—छोड़ूँगा।

अनुवाद

"'मैं आपके आदेशानुसार यहाँ नीलाचल, जगन्नाथपुरी में रह रहा हूँ। जब तक मैं जीवित हूँ, तब तक मैं यह स्थान नहीं छोड़ूँगा।'"

গোপ-লীলায় পাইলা যেই প্রসাদ-বসনে ।
মাতারে পাঠান তাহা পুরীর বচনে ॥ ১২ ॥

গোপ-লীলায় পাইলা যেই প্রসাদ-বসনে ।
মাতারে পাঠান তাহা পুরীর বচনে ॥ ১২ ॥

गोप-लीलाय—गोप बालक की लीला में; **पाइला**—पाया; **येइ**—जो भी; **प्रसाद**—प्रसाद; **वसने**—वस्त्र; **मातारे**—अपनी माता को; **पाठान**—भेजा; **ताहा**—वह; **पुरीर वचने**—परमानन्द पुरी की आज्ञा से।

अनुवाद

परमानन्द पुरी की आज्ञा का पालन करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपनी माता के पास वह प्रसाद-वस्त्र भेजा, जिसे भगवान् जगन्नाथ ने अपनी गोपलीला के बाद छोड़ दिया था।

জগন্নাথের উত্তম প্রসাদ আনিয়া যতনে ।
মাতারে পৃথক্পাঠান, আর ভক্ত-গণে ॥ ১৩ ॥

জগন্নাথের উত্তম প্রসাদ আনিয়া যতনে ।
মাতারে পৃথক্ পাঠান্, আর ভক্ত-গণে ॥ ১৩ ॥

जगन्नाथेर—भगवान् जगन्नाथ का; **उत्तम**—उत्तम; **प्रसाद**—प्रसाद; **आनिया यतने**—यत्नपूर्वक ले आये; **मातारे**—अपनी माता को; **पृथक्**—अलग से; **पाठान**—भेजा; **आर भक्त-गणे**—तथा अन्य भक्तों को।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु यत्नपूर्वक जगन्नाथ जी का उत्तम कोटि का प्रसाद ले आये और उन्होंने इसे अलग-अलग थैलियों में अपनी माता तथा नदिया के भक्तों के लिए भेजा।

মাতৃ-ভক্ত-গণের প্রভু হন শিরোমণি ।
সন্ন্যাস করিয়া সদা সেবেন জননী ॥১৪॥

मातृ-भक्त-गणेर प्रभु हन शिरोमणि ।
सन्यास करिया सदा सेवेन जननी ॥१४॥

मातृ-भक्त-गणेर—मातृभक्तों में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हन**—हैं; **शिरोमणि**—शिरोमणि; **सन्यास करिया**—संन्यास लेने के बाद भी; **सदा**—सदैव; **सेवेन**—सेवा की; **जननी**—उनकी माता की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु समस्त मातृ-भक्तों में सर्वश्रेष्ठ हैं। उन्होंने संन्यास व्रत लेने के बाद भी अपनी माता की सेवा की।

জগদানন্দ নদীয়া গিয়া মাতারে মিলিলা ।
প্রভুর যত নিবেদন, সকল কহিলা ॥১৫॥

जगदानन्द नदीया गिया मातारे मिलिला ।
प्रभुर यत निवेदन, सकल कहिला ॥१५॥

जगदानन्द—जगदानन्द; **नदीया**—नवद्वीप को; **गिया**—गये; **मातारे**—माता शची; **मिलिला**—मिले; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **यत निवेदन**—सर्व नमस्कार; **सकल**—सब कुछ; **कहिला**—उन्होंने कहा।

अनुवाद

इस तरह जगदानन्द पण्डित नदिया लौट आये और जब वे शचीमाता से मिले, तो उन्होंने उनसे महाप्रभु का नमस्कार कहा।

আচার্যাদি ভক্ত-গণে মিলিলা প্রসাদ দিয়া ।
মাতা-ঠাঞি আজ্ঞা ল-ইলা মাসেক রহিয়া ॥১৬॥

आचार्य्यादि भक्त-गणे मिलिला प्रसाद दिया ।
माता-ठाञि आज्ञा ल-इला मासेक रहिया ॥ १६ ॥

आचार्य्य-आदि—अद्वैत आचार्य इत्यादि; **भक्त-गणे**—सारे भक्त; **मिलिला**—वे मिले; **प्रसाद दिया**—भगवान् जगन्नाथ का प्रसाद दिया; **माता-ठाञि**—माता शची से; **आज्ञा ल-इला**—जाने की आज्ञा माँगी; **मासेक रहिय**—एक मास रहने के बाद।

अनुवाद

इसके बाद वे अद्वैत आचार्य इत्यादि अन्य सारे भक्तों से मिले और उन्हें जगन्नाथ जी का प्रसाद दिया। एक मास रहने के बाद उन्होंने शची माता से विदा होने की आज्ञा माँगी।

আচার্যের ঠাঞি গিয়া আজ্ঞা মাগিলা ।
আচার্য-গোসাঞি প্রভুরে সন্দেশ কহিলা ॥ ১৭ ॥

আচার্য্যের ঠাঞি গিয়া আজ্ঞা মাগিলা ।
আচার্য্য-গোসাঞি প্রভুরে সন্দেশ কহিলা ॥ ১৭ ॥

আচার্য্যের ঠাঞি—अद्वैत आचार्य के पास; **गिया**—जाकर; **आज्ञा मागिला**—जाने की अनुमति माँगी; **आचार्य्य-गोसाञि**—अद्वैत आचार्य; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **सन्देश कहिला**—सन्देश भेजा।

अनुवाद

जब अद्वैत आचार्य के पास जाकर उन्होंने लौट जाने की अनुमति माँगी, तो अद्वैत प्रभु ने श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए एक सन्देश दिया।

তরজা-প্রহেলী আচার্য কহেন ঠারে-ঠোরে ।
প্রভু মাত্র বুঝেন, কেহ বুঝিতে না পারে ॥ ১৮ ॥

তরজা-প্রহেলী আচার্য্য কহেন ঠারে-ঠোরে ।
প্রভু মাত্র বুঝেন, কেহ বুঝিতে না পারে ॥ ১৮ ॥

तरजा-प्रहेली—द्विअर्थी भाषा में एक गीत; **आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य; **कहेन**—कहा; **ठारे-ठोरे**—कुछ संकेत करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मात्र**—केवल; **बुझेन**—समझ सकते थे; **केह बुझिते ना पारे**—अन्य लोग नहीं समझ सकते थे।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य ने द्विअर्थी भाषा में एक गीत लिखा था, जिसका आशय श्री चैतन्य महाप्रभु तो समझ सकते थे, किन्तु अन्य लोग नहीं समझ सकते थे।

"प्रभुरे कहिह आमार कोटि नमस्कार ।
एइ निवेदन ताँर चरणे आमार ॥ १९॥

"प्रभुरे कहिह आमार कोटि नमस्कार ।
एइ निवेदन ताँर चरणे आमार ॥ १९ ॥

प्रभुरे कहिह—भगवान् चैतन्य को बता दो; **आमार**—मेरे; **कोटि नमस्कार**—करोड़ों नमस्कार; **एइ निवेदन**—इस निवेदन में; **ताँर**—उनके; **चरणे**—चरणकमलों में; **आमार**—मेरे।

अनुवाद

इस गीत में अद्वैत प्रभु ने सर्वप्रथम श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में करोड़ों बार नमस्कार किया था। तत्पश्चात् उन्होंने उनके चरणकमलों में यह निवेदन किया था।

बाउलके कहिह,—लोक ह-इल बाउल ।
बाउलके कहिह,—हाटे ना बिकाय चाउल ॥२०॥

बाउलके कहिह,—लोक ह-इल बाउल ।
बाउलके कहिह,—हाटे ना विकाय चाउल ॥ २० ॥

बाउलके कहिह—जो बावले का अभिनय कर रहे हैं, उन श्री चैतन्य महाप्रभु को कहना; **लोक**—लोग; **ह-इल**—हो गये हैं; **बाउल**—प्रेम में बावले; **बाउलके कहिह**—श्री चैतन्य महाप्रभु से कहो; **हाटे**—बाजार में; **ना**—नहीं; **विकाय**—बिकता है; **चाउल**—चावल।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु, जो कि बावले की तरह अभिनय कर रहे हैं, उनसे कृपया यह कहना कि यहाँ हर व्यक्ति उन्हीं की तरह बावला हो गया है। कृपया उनसे यह भी कहना कि बाजार में अब चावल की कोई मांग नहीं है।

বাউলকে কহিহ,—কায়ে নাহিক আউল ।
বাউলকে কহিহ,—ইহা কহিয়াছে বাউল'' ॥২১॥

বাউলকে কহিহ,—কায়ে নাহিক আউল ।
বাউলকে কহিহ,—ইহা কহিয়াছে বাউল" ॥ ২১ ॥

বাউলকে কহিহ—बावरे श्री चैतन्य महाप्रभु से कहना; **কায়ে**—व्यापार में; **নাহিক**—नहीं है; **আউল**—प्रेम में बावले हुए व्यक्तियों को; **বাউলকে কহিহ**—बावरे श्री चैतन्य महाप्रभु को यह भी कहना; **ইহা**—यह; **কহিয়াছে**—कहा है; **বাউল**—अन्य बावरे श्री अद्वैत प्रभु ने।

अनुवाद

"और उन्हें कहना कि जो लोग भावावेश में बावले हैं, वे अब भौतिक जगत् में रुचि नहीं रखते। श्री चैतन्य महाप्रभु से यह भी कहना कि प्रेम में बावले हुए व्यक्ति (अद्वैत प्रभु) ने ये शब्द कहे हैं।"

এত শুনি' জগদানন্দ হাসিতে লাগিলা ।
নীলাচলে আসি' তবে প্রভুরে কহিলা ॥২২॥

এত শুনি' জগদানন্দ হাসিতে লাগিলা ।
নীলাচলে আসি' তবে প্রভুরে কহিলা ॥ ২২ ॥

এত শুনি'—यह सुनकर; **জগদানন্দ**—जगदानन्द पण्डित; **হাসিতে লাগিলা**—हँसने लगे; **নীলাচলে**—जगन्नाथ पुरी को; **আসি'**—लौटकर; **তবে**—तब; **প্রভুরে কহিলা**—उन्होंने यह सब श्री चैतन्य महाप्रभु को बताया।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य के वचन सुनकर जगदानन्द पण्डित हँसने लगे और जब वे जगन्नाथपुरी या नीलाचल लौटकर आये, तो उन्होंने चैतन्य महाप्रभु को सब सूचित कर दिया।

তরজা শুনি' মহাপ্রভু ঈষৎ হাসিলা ।
'তাঁর যেই আজ্ঞা'—বলি' মৌন ধরিলা ॥২৩॥

তরজা শুনি' মহাপ্রভু ঈষৎ হাসিলা ।
'তাঁর যেই আজ্ঞা'—বলি' মৌন ধরিলা ॥ ২৩ ॥

तरजा शुनि'—गीत सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ईषत् हासिला**—मुस्कुराये; **ताँर येइ आज्ञा**—यह उनका आदेश है; **बलि'**—कहकर; **मौन धरिला**—मौन हो गये।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य से द्विअर्थी गीत सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु चुपके-चुपके हँसने लगे और उन्होंने कहा, "यह उनका आदेश है।" तब वे मौन हो गये।

জানিয়াও স্বরূপ গোসাঞি প্রভুরে পুছিল ।
'এই তরজার অর্থ বুঝিতে নারিল' ॥২৪॥

জানিয়াও স্বরূপ গোসাঞি প্রভুরে পুছিল ।
'এই তরজার অর্থ বুঝিতে নারিল' ॥ ২৪॥

জানিয়াও—যদ্যপি জানते थे; **স্বরূপ গোসাঞি**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **প্রভুরে পুছিল**—श्री चैतन्य महाप्रभु से पूछा; **এই তরজার অর্থ**—इस गीत का अर्थ; **বুঝিতে**—समझने के लिए; **নারিল**—मैं समर्थ नहीं हूँ।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने रहस्य जानते हुए भी महाप्रभु से पूछा, "इस गीत का क्या अर्थ है? मैं इसे समझ नहीं सका।"

প্রভু কহেন,—'আচার্য হয় পূজক প্রবল ।
আগম-শাস্ত্রের বিধি-বিধানে কুশল ॥২৫॥

প্রভু কহেন,—'আচার্য্য হয় পূজক প্রবল ।
আগম-শাস্ত্রের বিধি-বিধানে কুশল ॥ ২৫॥

প্রভু কহেন—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **আচার্য্য হয় পূজক প্রবল**—अद्वैत आचार्य महान् आराधक हैं; **আগম-শাস্ত্রের**—वैदिक साहित्य के; **বিধি-বিধানে কুশল**—विधि-विधानों में निपुण।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "अद्वैत आचार्य भगवान् के महान् आराधक हैं और वे वैदिक साहित्य में निर्देशित विधि-विधानों में अत्यन्त पारंगत हैं।

উপাসনা লাগি' দেবের করেন আবাহন ।
পূজা লাগি' কত কাল করেন নিরোধন ॥২৬॥

উপাসনা লাগি' দেবের করেন আবাহন ।
পূজা লাগি' কত কাল করেন নিরোধন ॥ ২৬ ॥

উপাসনা লাগি'—अर्चाविग्रह की पूजा करने के लिए; **देवेर**—भगवान् की; **करेन आवाहन**—आने के लिए आमन्त्रित करते हैं; **पूजा लागि'**—पूजा करने के लिए; **कत काल**—कुछ समय तक; **करेन निरोधन**—वे विग्रह को रखते हैं।

अनुवाद

"अद्वैत आचार्य भगवान् को आने तथा पूजित होने के लिए आमन्त्रित करते हैं। वे पूजा करने के लिए अर्चाविग्रह को कुछ समय तक रखते हैं।

পূজা-নির্বাহণ হৈলে পাছে করেন বিসর্জন ।
তরজার না জানি অর্থ, কিবা তাঁর মন ॥২৭॥

পূজা-নির্বাহণ হৈলে পাছে করেন বিসর্জন ।
তরজার না জানি অর্থ, কিবা তাঁর মন ॥ ২৭ ॥

पूजा-निर्वाहण—पूजा पूरी होने पर; **हैले**—जब होता है; **पाछे**—अन्त में; **करेन विसर्जन**—विग्रह को वापस भेज देते हैं; **तरजार**—गीत का; **ना जानि**—मैं नहीं जानता; **अर्थ**—अर्थ; **किबा ताँर मन**—उनके मन में क्या है।

अनुवाद

"पूजा पूरी हो जाने पर वे अर्चाविग्रह को अन्यत्र भेज देते हैं। मैं न तो इस गीत का अर्थ जानता हूँ, न ही यह जानता हूँ कि अद्वैत प्रभु के मन में क्या है।

মহা-যোগেশ্বর আচার্য—তরজাতে সমর্থ ।
আমিহ বুঝিতে নারি তরজার অর্থ' ॥২৮॥

মহা-য়োগেশ্বর আচার্য্য—তরজাতে সমর্থ ।
আমিহ বুঝিতে নারি তরজার অর্থ' ॥ ২৮ ॥

महा-योगेश्वर—महान् योगी; **आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य; **तरजाते समर्थ**—गीत लिखने

में अति निपुण; **आमिह**—फिर भी मैं; **बुझिते**—समझने के लिए; **नारि**—समर्थ नहीं हूँ; **तरजार**—गीत का; **अर्थ**—अर्थ।

अनुवाद

"अद्वैत आचार्य महान् योगी हैं। उन्हें कोई नहीं समझ सकता। वे गीत लिखने में इतने पटु हैं कि मैं भी नहीं समझ पाता।"

শুনিয়া বিস্মিত হ-ইলা সব ভক্ত-গণ ।
স্বরূপ-গোসাঞি কিছু হ-ইলা বিমন ॥২৯॥

शुनिया विस्मित ह-इला सब भक्त-गण ।
स्वरूप-गोसाञि किछु ह-इला विमन ॥ २९ ॥

शुनिया—सुनकर; **विस्मित**—चकित; **ह-इला**—हो गये; **सब**—सब; **भक्त-गण**—भक्त; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **किछु**—कुछ; **ह-इला**—हो गये; **विमन**—खिन्न।

अनुवाद

यह सुनकर सारे भक्त चकित हो गये, किन्तु स्वरूप दामोदर गोस्वामी तो विशेष रूप से कुछ-कुछ खिन्न हो गये।

সেই দিন হৈতে প্রভুর আর দশা হ-ইল ।
কৃষ্ণের বিচ্ছেদ-দশা দ্বিগুণ বাড়িল ॥৩০॥

सेइ दिन हैते प्रभुर आर दशा ह-इल ।
कृष्णेर विच्छेद-दशा द्विगुण बाड़िल ॥ ३० ॥

सेइ दिने हैते—उस दिन से; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आर**—अन्य; **दशा**—दशा; **ह-इल**—हुई; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण से; **विच्छेद-दशा**—विरह की दशा; **द्वि-गुण**—द्विगुणित; **बाड़िल**—वृद्धि हुई।

अनुवाद

उस दिन से श्री चैतन्य महाप्रभु की भावदशा विशेष रूप से बदल गई। कृष्ण से वियोग की उनकी भावना द्विगुणित हो उठी।

উন্মাদ-প্রলাপ-চেষ্টা করে রাত্রি-দিনে ।
রাধা-ভাবাবেশে বিরহ বাড়ে অনুক্ষণে ॥ ৩১ ॥

উন্মাদ-প্রলাপ-চেষ্টা করে রাত্রি-দিনে ।
রাধা-ভাবাবেশে বিরহ বাড়ে অনুক্ষণে ॥ ৩১ ॥

উন্মাদ—উন্মাद; **প্রলাপ**—প্রলাপ; **চেষ্টা**—কার্য; **করে রাত্রি-দিনে**—জো वे दिन-रात करते; **राधा-भाव-आवेशे**—श्रीमती राधारानी के भाव में; **विरह**—विरह; **बाड़े**—बढ़ा; **अनुक्षणे**—प्रतिक्षण।

अनुवाद

चूँकि श्रीमती राधारानी के भावावेश में महाप्रभु की विरह-भावना प्रतिक्षण बढ़ती गई, अतः दिन तथा रात दोनों ही समय उनके कार्य उग्र तथा अविवेकपूर्ण होने लगे।

আচম্বিতে স্ফুরে কৃষ্ণের মথুরা-গমন ।
উদঘূর্ণা-দশা হৈল উন্মাদ-লক্ষণ ॥ ৩২ ॥

আচম্বিতে স্ফুরে কৃষ্ণের মথুরা-গমন ।
উদ্ঘূর্ণা-দশা হৈল উন্মাদ-লক্ষণ ॥ ৩২ ॥

आचम्बिते—अचानक; **स्फुरे**—उदय हुआ; **कृष्णेर**—भगवान कृष्ण का; **मथुरा-गमन**—मथुरा के लिए प्रस्थान; **उद्घूर्णा-दशा**—उद्घूर्णा नामक भाव दशा; **हैल**—हुई; **उन्माद-लक्षण**—उन्माद के लक्षण।

अनुवाद

एकाएक श्री चैतन्य महाप्रभु के भीतर भगवान् कृष्ण के मथुरा गमन का दृश्य उदय हो आया और वे उद्घूर्णा नामक उन्माद के लक्षण प्रदर्शित करने लगे।

রামানন্দের গলা ধরি' করেন প্রলাপন ।
স্বরূপে পুছেন মানি' নিজ-সখী-গণ ॥ ৩৩ ॥

রামানন্দের গলা ধরি' করেন প্রলাপন ।
স্বরূপে পুছেন মানি' নিজ-সখী-গণ ॥ ৩৩ ॥

रामानन्देर—रामानन्द राय का; **गला धरि'**—गला पकड़कर; **करेन प्रलापन**—प्रलाप करने लगे; **स्वरूपे पुछेन**—स्वरूप दामोदर से पूछा; **मानि'**—मानकर; **निज-सखी-गण**—गोपी सखी।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु उन्मत्त की तरह रामानन्द राय का गला पकड़कर बोलने लगे और स्वरूप दामोदर को अपनी गोपी सखी मानकर उनसे प्रश्न पूछने लगे।

पूर्वे येन विशाखारे राधिका पुछिला ।
सेइ श्लोक पड़ि' प्रलाप करिते लागिला ॥३४॥

पूर्वे येन विशाखारे राधिका पुछिला ।
सेइ श्लोक पड़ि' प्रलाप करिते लागिला ॥ ३४॥

पूर्वे—पहले; **येन**—जैसे; **विशाखारे**—विशाखा को; **राधिका**—श्रीमती राधारानी; **पुछिला**—पूछा या; **सेइ श्लोक**—वह श्लोक; **पड़ि'**—पढ़कर; **प्रलाप**—उन्मत्त की तरह बोलते हुए; **करिते लागिला**—करने लगे।

अनुवाद

जिस तरह श्रीमती राधारानी ने अपनी निजी सखी विशाखा से पूछा था, उसी तरह श्री चैतन्य महाप्रभु भी वही श्लोक पढ़कर उन्मत्त की तरह बोलने लगे।

क नन्द-कुल-चन्द्रमाः क शिखि-चन्द्रकालङ्कृतिः
क मन्द्र-मुरली-रवः क नु सुरेन्द्र-नील-द्युतिः ।
क रास-रस-ताण्डवी क सखि जीव-रक्षौषधिर्
निधिर्मम सुहृत्तमः क वत हन्त हा धिग्विधिम् ॥३५॥

क्व नन्द-कुल-चन्द्रमाः क्व शिखि-चन्द्रकालङ्कृतिः
क्व मन्द्र-मुरली-रवः क्व नु सुरेन्द्र-नील-द्युतिः ।
क्व रास-रस-ताण्डवी क्व सखि जीव-रक्षौषधिर्
निधिर्मम सुहृत्तमः क्व बत हन्त हा धिग्विधिम् ॥ ३५॥

क्व—कहाँ; **नन्द-कुल-चन्द्रमाः**—कृष्ण, जो नन्द महाराज के कुल रूपी सागर में

चन्द्रमा की तरह उदित हुए हैं; **क्व**—कहाँ; **शिखि-चन्द्रक-अलङ्कृतिः**—कृष्ण, जिनका सर मोरपंख से सुशोभित है; **क्व**—कहाँ; **मन्द्र-मुरली-रवः**—कृष्ण, जिनकी वंशी गहरी ध्वनि उत्पन्न करती है; **क्व**—कहाँ; **नु**—निश्चय ही; **सुरेन्द्र-नील-द्युतिः**—कृष्ण, जिनकी शारीरिक कान्ति इन्द्रनील मणि के समान है; **क्व**—कहाँ; **रास-रस-ताण्डवी**—कृष्ण, जो रास नृत्य में निपुण हैं; **क्व**—कहाँ; **सखि**—हे प्रिय सखी; **जीव-रक्षा-औषधिः**—कृष्ण, जो औषध रूप हैं, जो प्राण बचा सकते हैं; **निधिः**—निधि; **मम**—मेरे; **सुहृत्-तमः**—सुहृद मित्र; **क्व**—कहाँ; **बत**—मैं खिन्न हूँ; **हन्त**—हाय; **हा**—अरे; **धिक् विधिम्**—विधाता को धिक्कार है।

अनुवाद

"'हे प्रिय सखी, कहाँ हैं वे कृष्ण, जो कि महाराज नन्द के कुलरूपी सागर से उदय होने वाले चन्द्रमा की तरह हैं? कहाँ हैं वे कृष्ण, जिनका सिर मोर पंख से सुशोभित है? कहाँ हैं वे? कहाँ हैं वे कृष्ण, जिनकी वंशी इतना गम्भीर स्वर उत्पन्न करती है? ओह! कहाँ हैं वे कृष्ण, जिनकी शारीरिक कान्ति इन्द्रनील मणि के समान है? कहाँ है वे कृष्ण, जो रास नृत्य में इतने निपुण हैं? ओह! कहाँ हैं वे, जो मेरे प्राण बचा सकते हैं? कृपा करके मुझे बतलाओ कि अपने जीवन के कोष तथा सर्वोत्कृष्ट मित्र कृष्ण को कहाँ पा सकती हूँ? उनसे विरह का अनुभव करती हुई मैं अपने भाग्य के निर्माता विधाता को धिक्कारती हूँ।'

तात्पर्य

यह श्लोक श्रील रूप गोस्वामी कृत *ललित माधव* (३.२५) में पाया जाता है।

"ব্রজেন্দ্র-কুল——দুগ্ধ-সিন্ধু, কৃষ্ণ তাহে পূর্ণ ইন্দু,
জন্মি' কৈলা জগতুজোর ।
কান্ত্যমৃত যেবা পিয়ে, নিরন্তর পিয়া জিয়ে,
ব্রজ-জনের নয়ন-চকোর ॥৩৬॥

"व्रजेन्द्र-कुल——दुग्ध-सिन्धु, कृष्ण ताहे पूर्ण इन्दु,
जन्मि' कैला जगत् उजोर ।
कान्त्यमृत येबा पिये, निरन्तर पिया जिये,
व्रज-जनेर नयन-चकोर ॥ ३६ ॥

व्रजेन्द्र-कुल—व्रजभूमि में महाराज नन्द का कुल; **दुग्ध-सिन्धु**—दुग्ध के सागर के समान; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **ताहे**—उसमें; **पूर्ण**—पूर्ण; **इन्दु**—चन्द्रमा; **जन्मि'**—उदित; **कैला**—हुए हैं; **जगत्**—सारा जगत्; **उजोर**—प्रकाशित; **कान्ति-अमृत**—उनकी शारीरिक कान्ति का अमृत; **येबा पिये**—जो भी पाता है; **निरन्तर**—सदैव; **पिया**—पाते हुए; **जिये**—जीते हैं; **व्रज-जनेर**—वृन्दावन के निवासी; **नयन-चकोर**—चकोर पक्षी के समान आँखें।

अनुवाद

"महाराज नन्द का परिवार दुग्ध सागर की तरह है, जिसमें से भगवान् कृष्ण समग्र ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने वाले पूर्ण चन्द्रमा के समान उदित हुए हैं। व्रजवासियों के नेत्र उन चकोर पक्षियों के समान हैं, जो उनकी शारीरिक द्युति के अमृत का निरन्तर पान करते हैं और इस तरह शान्तिपूर्वक जीवन बिताते हैं।

সখি হে, কোথা কৃষ্ণ, করাহ দরশন
ক্ষণেকে যাহার মুখ, না দেখিলে ফাটে বুক, ।
শীঘ্র দেখাহ, না রহে জীবন ॥৩৭॥

সখি হে, কোথা কৃষ্ণ, করাহ দরশন
ক্ষণেকে যাহার মুখ, না দেখিলে ফাটে বুক, ।
শীঘ্র দেখাহ, না রহে জীবন ॥৩৭॥

সখি হে—हे प्रिय सखी; **কোথা কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण कहाँ हैं; **করাহ দরশন**—कृपया मुझे उन्हें देखने दो; **ক্ষণেকে**—क्षणभर में; **যাহার**—जिनका; **মুখ**—मुख; **না দেখিলে**—यदि नहीं देखती; **ফাটে বুক**—मेरा हृदय फटता है; **শীঘ্র**—जल्दी; **দেখাহ**—दिखाओ; **না রহে জীবন**—जीवित नहीं रह सकती।

अनुवाद

"हे प्रिय सखी, कहाँ हैं कृष्ण? कृपया मुझे उनका दर्शन करने दो। यदि क्षण भर भी मैं उनका मुख नहीं देखती, तो मेरा हृदय फटने लगता है। कृपया मुझे तुरन्त ही उन्हें दिखलाओ, अन्यथा मैं जीवित नहीं रह सकती।

এই ব্রজের রমণী, কামার্ক-তপ্ত-কুমুদিনী,
নিজ-করামৃত দিয়া দান ।

প্রফুল্লিত করে যেই, কাহাঁ মোর চন্দ্র সেই,
দেখাহ, সখি, রাখ মোর প্রাণ ॥৩৮॥

এइ ব্রজের রমণী, কামার্ক-তপ্ত-কুমুদিনী,
নিজ-করামৃত দিয়া দান ।
প্রফুল্লিত করে যেइ, কাহাঁ মোর চন্দ্র সেइ,
দেখাহ, সখি, রাখ মোর প্রাণ ॥ ৩৮ ॥

এइ—ये; **ব্রজের রমণী**—वृन्दावन की स्त्रियाँ; **কাম-অর্ক-তপ্ত-কুমুদিনী**—कामवासना से तप्त कुमुदिनियों के समान; **নিজ**—अपने; **কর-অমৃত**—हाथों के अमृत से; **দিয়া**—देकर; **দান**—दान; **প্রফুল্লিত**—प्रफुल्लित; **করে**—करते हैं; **যেइ**—जो; **কাহাঁ**—कहाँ ; **মোর**—मेरे; **চন্দ্র**—चन्द्रमा; **সেइ**—वे; **দেখাহ**—कृपया दिखाओ; **সখি**—हे प्रिय सखी; **রাখ**—कृपया बचाओ; **মোর প্রাণ**—मेरा जीवन।

अनुवाद

"वृन्दावन की स्त्रियाँ कामवासनाओं के सूर्य से तप्त कुमुदिनियों के तुल्य हैं। किन्तु चन्द्रमा तुल्य कृष्ण उन्हें अपने हाथों का अमृत प्रदान करके प्रफुल्लित बनाते हैं। हे प्रिय सखी, अब मेरा वह चन्द्रमा कहाँ है? मुझे उसका दर्शन कराकर मेरा जीवन बचा लो!

কাহাঁ সে চূড়ার ঠাম, শিখি-পিঞ্ছের উড়ান,
নব-মেঘে যেন ইন্দ্র-ধনু ।
পীতাম্বর—তড়িদ্দ্যুতি, মুক্তা-মালা—বক-পাঁতি,
নবাম্বুদ জিনি' শ্যাম-তনু ॥৩৯॥

কাহাঁ সে চূড়ার ঠাম, শিখি-পিচ্ছের উড়ান,
নব-মেঘে যেন ইন্দ্র-ধনু ।
পীতাম্বর—তড়িদ্দ্যুতি, মুক্তা-মালা—বক-পাঁতি,
নবাম্বুদ জিনি' শ্যাম-তনু ॥ ৩৯ ॥

কাহাঁ—कहाँ; **সে**—वह; **চূড়ার ঠাম**—मुकुट का सौन्दर्य; **শিখি-পিচ্ছের উড়ান**—जिसके ऊपर मोरपंख है; **নব-মেঘে**—नवीन बादलों में; **যেন**—जैसे; **ইন্দ্র-ধনু**—इन्द्रधनुष; **পীত-অম্বর**—पिताम्बर; **তড়িত্-দ্যুতি**—बिजली की चमक के समान; **মুক্তা-মালা**—मोतियों का हार; **বক-পাঁতি**—बगुलों की पंक्ति के समान; **নব-অম্বুদ**—नवीन बादल; **জিনি'**—परास्त करनेवाला; **শ্যাম-তনু**—श्यामल देह।

अनुवाद

"हे प्रिय सखी, कहाँ है वह सुन्दर मुकुट, जिसके ऊपर मोरपंख नवीन बादलों में इन्द्रधनुष जैसा लगता है? वह पीताम्बर कहाँ है, जो बिजली के समान चमकता है? और कहाँ है वह मोतियों का गले का हार, जिसके मोती आकाश में उड़ रहे बगुलों की पंक्ति के समान लगते हैं? कृष्ण का श्यामल शरीर श्याम रंग के नये बादलों को पराजित करने वाला है।

एक-बार यार नयने लागे, सदा तार हृदये जागे,
कृष्ण-तनु——येन आम्र-आठा ।
नारी-मने पैशे हाय, यत्ने नाहि बाहिराय,
तनु नहे,——सेया-कुलेर काँटा ॥ ४० ॥

एक-बार यार नयने लागे, सदा तार हृदये जागे,
कृष्ण-तनु——येन आम्र-आठा ।
नारी-मने पैशे हाय, यत्ने नाहि बाहिराय,
तनु नहे,——सेया-कुलेर काँटा ॥ ४० ॥

एक-बार—एक बार; **यार**—जिसकी; **नयने**—आँखें; **लागे**—बन्दी बनाती है; **सदा**—सदैव; **तार**—उसके; **हृदये**—हृदय में; **जागे**—प्रमुख बना रहता है; **कृष्ण-तनु**—कृष्ण का देह; **येन**—के समान; **आम्र-आठा**—आम के वृक्ष का रस; **नारी-मने**—स्त्रियों के मन में; **पैशे**—प्रवेश करता है; **हाय**—हाय; **यत्ने**—अत्यन्त प्रयत्न करने पर भी; **नाहि**—नहीं; **बाहिराय**—बाहर आता; **तनु नहे**—साधारण शरीर नहीं है; **सेया-कुलेर काँटा**—सेया बेर वृक्ष के काँटे के समान।

अनुवाद

"यदि किसी व्यक्ति की आँखें एक बार भी कृष्ण के सुन्दर शरीर को बन्दी बना लेती हैं, तो वह उसके हृदय के भीतर सदैव प्रमुख बना रहता है। कृष्ण का शरीर आम वृक्ष के रस के समान है, क्योंकि जब यह स्त्रियों के मनों में प्रवेश करता है, तो महान् प्रयत्न करने पर भी यह बाहर नहीं आता। इस तरह कृष्ण का अद्वितीय शरीर सेया बेर वृक्ष के काँटे के समान है।

জিনিয়া তমাল-দ্যুতি, ইন্দ্রনীল-সম কান্তি,
সে কান্তিতে জগত্মাতায় ।
শৃঙ্গার-রস-সার ছানি', তাতে চন্দ্র-জ্যোৎস্না সানি',
জানি বিধি নিরমিলা তায় ॥ ৪১ ॥

জিনিয়া তমাল-দ্যুতি, ইন্দ্রনীল-সম কান্তি,
সে কান্তিতে জগত্মাতায় ।
শৃঙ্গার-রস-সার ছানি', তাতে চন্দ্র-জ্যোৎস্না সানি',
জানি বিধি নিরমিলা তায় ॥ ৪১ ॥

জিনিয়া—को पराजित करने वाली; **তমাল-দ্যুতি**—तमाल वृक्ष की आभा के समान; **ইন্দ্র-নীল**—इन्द्रनील मणि; **সম কান্তি**—के समान कान्ति; **সে কান্তিতে**—उस कान्ति से; **জগত্ মাতায়**—सारा जगत् उन्मत्त हो जाता है; **শৃঙ্গার-রস**—माधुर्य प्रेम का रस; **সার**—सार; **ছানি'**—छानकर; **তাতে**—उसमें; **চন্দ্র-জ্যোৎস্না**—पूर्ण चन्द्र की चाँदनी; **সানি'**—मिलाकर; **জানি**—मैं जानती हूँ; **বিধি**—विधाता; **নিরমিলা**—निर्मल बनाया है; **তায়**—वह।

अनुवाद

"कृष्ण की शारीरिक द्युति इन्द्रनीलमणि के समान चमकीली है और वह तमालवृक्ष की कान्ति को पराजित करने वाली है। उनके शरीर की कान्ति सारे जगत् को पागल बना देती है, क्योंकि विधाता ने माधुर्य प्रेम के रस के सार को परिष्कृत करके उसे चाँदनी से मिलाकर पारदर्शी बना दिया है।

কাহাঁ সে মুরলী-ধ্বনি, নবাভ্র-গর্জিত জিনি',
জগতাকর্ষে শ্রবণে যাহার ।
উঠি' ধায় ব্রজ-জন, তৃষিত চাতক-গণ,
আসি' পিয়ে কান্ত্যমৃত-ধার ॥ ৪২ ॥

কাহাঁ সে মুরলী-ধ্বনি, নবাভ্র-গর্জিত জিনি',
জগতাকর্ষে শ্রবণে যাহার ।
উঠি' ধায় ব্রজ-জন, তৃষিত চাতক-গণ,
আসি' পিয়ে কান্ত্যমৃত-ধার ॥ ৪২ ॥

কাহাঁ—जहाँ; **সে**—वह; **মুরলী-ধ্বনি**—वंशी की ध्वनि; **নব-অভ্র-গর্জিত জিনি'**—

नवीन बादल की गर्जन को जीतने वाली; **जगत्**—सारा जगत्; **आकर्षे**—आकर्षित करती है; **श्रवणे**—श्रवणेन्द्रिय को; **याहार**—जिनकी; **उठि'**—उठकर; **धाय**—दोड़ते हैं; **व्रज-जन**—व्रजभूमि के निवासी; **तृषित चातक-गण**—तृषित चातक पक्षीओं की तरह; **आसि'**—आकर; **पिये**—पीते हैं; **कान्ति-अमृत-धार**—कृष्ण की शारीरिक कान्ति के अमृत की धारा को।

अनुवाद

"कृष्ण की वंशी की गहरी ध्वनि नवीन बादलों की गर्जना को पराजित कर देती है और सारे जगत् के कानों को आकृष्ट करती है। इस तरह वृन्दावन के निवासी जब उठते हैं, तब वे तृषित पपीहों की तरह कृष्ण की शारीरिक कान्ति के अमृत की धारा को पीकर उस ध्वनि का पीछा करते हैं।

মোর সেই কলা-নিধি, প্রাণ-রক্ষা-মহৌষধি,
সখি, মোর তেঁহো সুহৃত্তম ।
দেহ জীয়ে তাঁহা বিনে, ধিকেই জীবনে,
বিধি করে এত বিড়ম্বন!'' ॥৪৩॥

मोर सेइ कला-निधि, प्राण-रक्षा-महौषधि,
सखि, मोर तेंहो सुहृत्तम ।
देह जीये ताँहा विने, धिक् एइ जीवने,
विधि करे एत विड़म्बन!" ॥४३॥

मोर—मेरे; **सेइ**—वह; **कला-निधि**—कला तथा संस्कृति के आगार; **प्राण-रक्षा-महा-औषधि**—मेरे प्राण बचाने की औषधि; **सखि**—हे प्रिय सखी; **मोर**—मेरे; **तेंहो**—वे; **सुहृत्-तम**—सुहृद मित्र; **देह जीये**—मेरा शरीर जीता है; **ताँहा विने**—उनके बिना; **धिक्**—धिक्कार है; **एइ जीवने**—इस जीवन को; **विधि**—विधाता; **करे**—करता है; **एत विड़म्बन**—इतनी ठगाई।

अनुवाद

"कृष्ण कला तथा संस्कृति के आगार हैं और वे वह रामबाण औषधि हैं, जो मेरे जीवन को बचाती है। हे सखी, चूँकि मैं अपने मित्रों में से सर्वोत्तम मित्र के बिना जीवित हूँ, अतएव मैं अपनी आयु को धिक्कारती हूँ। मैं सोचती हूँ कि विधाता ने मुझे कई तरह से ठगा है।

'যে-জন জীতে নাহি চায়, তারে কেনে জীয়ায়',
বিধি-প্রতি উঠে ক্রোধ-শোক ।
বিধিরে করে ভৎর্সন, কৃষ্ণে দেন ওলাহন,
পড়ি' ভাগবতের এক শ্লোক ॥ ৪৪॥

'যে-জন জীতে নাহি চায়, তারে কেনে জীয়ায়',
বিধি-প্রতি উঠে ক্রোধ-শোক ।
বিধিরে করে ভর্ৎসন, কৃষ্ণে দেন ওলাহন,
পড়ি' ভাগবতের এক শ্লোক ॥ ৪৪॥

যে-জন—জো व्यक्ति; **জীতে**—जीना; **নাহি চায়**—नहीं चाहता; **তারে**—उसे; **কেনে**—क्यों; **জীয়ায়**—जीने देता है; **বিধি-প্রতি**—विधाता के प्रति; **উঠে**—जाग्रत हुआ; **ক্রোধ-শোক**—क्रोध तथा शोक; **বিধিরে**—विधाता की; **করে**—करता है; **ভর্ৎসন**—भर्त्सना; **কৃষ্ণে**—भगवान् कृष्ण पर; **দেন**—लगाता है; **ওলাহন**—आक्षेप; **পড়ি'**—पढ़ा; **ভাগবতের**—श्रीमद्भागवत का; **এক শ্লোক**—एक श्लोक।

अनुवाद

"भला विधाता उस व्यक्ति को क्यों जीने देता है, जो जीना नहीं चाहता?" इस विचार से श्री चैतन्य महाप्रभु में क्रोध तथा शोक उत्पन्न हो गया। तब उन्होंने श्रीमद्भागवत का एक श्लोक पढ़ा, जो विधाता को धिक्कारता है और कृष्ण के प्रति आक्षेप लगाता है।

অহো বিধাতস্তব ন ক্বচিদ্দয়া
সংয়োজ্য মৈত্র্যা প্রণয়েন দেহিনঃ ।
তাংশ্চাকৃতার্থান্বিয়ুনঙ্ক্ষ্যপার্থকং
বিচেষ্টিতং তেঽর্ভক-চেষ্টিতং যথা ॥ ৪৫॥

অহো বিধাতস্তব ন ক্বচিদ্দয়া
সংযোজ্য মৈত্র্যা প্রণয়েন দেহিনঃ ।
তাংশ্চাকৃতার্থান্বিয়ুনঙ্ক্ষ্যপার্থকং
বিচেষ্টিতং তেঽর্ভক-চেষ্টিতং যথা ॥ ৪৫॥

অহো—अहो; **বিধাতঃ**—हे विधाता; **তব**—तुम्हारी; **ন**—नहीं; **ক্বচিৎ**—कभी भी; **দয়া**—दया; **সংযোজ্য**—संयोग करते हो; **মৈত্র্যা**—मित्रता द्वारा; **প্রণয়েন**—तथा स्नेह द्वारा; **দেহিনঃ**—देहधारी जीवों का; **তান্**—उनको; **চ**—तथा; **অকৃত-অর্থান্**—प्राप्त किये बिना;

वियुनङ्क्षि—तुम करवाते हो; **अपार्थकम्**—वियोग; **विचेष्टितम्**—कार्यकलाप; **ते**—तुम्हारे; **अर्भक**—बच्चे का; **चेष्टितम्**—बचकाना खेल; **यथा**—जैसा।

अनुवाद

"'हे विधाता, तुममें तनिक भी दया नहीं है! तुम पहले तो मैत्री तथा स्नेह के द्वारा देहधारी जीवों को पास-पास लाते हो, किन्तु इसके पूर्व कि उनकी इच्छाएँ पूरी हों, तुम उन्हें विलग कर देते हो। तुम्हारे कार्यकलाप बच्चों के मूर्खतापूर्ण खिलवाड़ों जैसे हैं।'

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.३९.१९) से उद्धृत हुआ है। यह श्लोक व्रज बालाओं ने तब कहा था, जब अक्रूर तथा बलराम के साथ कृष्ण वृन्दावन से मथुरा के लिए चल पड़े। गोपियाँ शोक कर रही थीं कि विधाता ने पहले तो कृष्ण तथा बलराम से स्नेह तथा प्रेम में उनके मिलन को सम्भव बनाया, किन्तु उसके बाद उसने उन्हें विलग कर दिया है।

"না জানিস্প্রেম-মর্ম, ব্যর্থ করিস্পরিশ্রম,
তোর চেষ্টা——বালক-সমান ।
তোর যদি লাগ্পাইয়ে, তবে তোরে শিক্ষা দিয়ে,
এমন যেন না করিস্বিধান ॥৪৬॥

**"না জানিস্ প্রেম-মর্ম, ব্যর্থ করিস্ পরিশ্রম,
তোর চেষ্টা——বালক-সমান ।
তোর যদি লাগ্ পাইয়ে, তবে তোরে শিক্ষা দিয়ে,
এমন যেন না করিস্ বিধান ॥ ४६ ॥**

ना जानिस्—तुम नहीं जानते; **प्रेम-मर्म**—प्रेम-व्यवहार का मर्म; **व्यर्थ करिस्**—तुम व्यर्थ बनाते हो; **परिश्रम**—सर्व प्रयास; **तोर चेष्टा**—तुम्हारे कार्यकलाप; **बालक-समान**—बच्चे के बचकाने कार्य जैसे; **तोर यदि लाग् पाइये**—यदि मैं तुम से मिलने का अवसर प्राप्त करूँ; **तबे**—तब; **तोरे**—तुमको; **शिक्षा दिये**—कुछ पाठ पढ़ायें; **एमन**—इस तरह; **येन**—जिससे; **ना करिस् विधान**—व्यवस्था नहीं करोगे।

अनुवाद

"हे विधाता, तुम प्रेम-व्यापार के मर्म को नहीं जानते, इसलिए तुम

हमारे प्रयासों को व्यर्थ बना देते हो। यह तुम्हारे बचपने को बतलाता है। यदि हम तुम्हें पकड़ पायें, तो ऐसा पाठ पढ़ायें कि तुम फिर कभी ऐसी व्यवस्था न करो।

অরে বিধি, তুই বড়-ই নিঠুর
অন্যো'ন্য দুর্লভ জন, প্রেমে করাঞা সম্মিলন, ।
'অকৃতার্থান্' কেনে করিস্দূর? ॥ ৪৭ ॥

अरे विधि, तुइ बड़-इ निठुर
अन्यो'न्य दुर्लभ जन, प्रेमे कराञा सम्मिलन, ।
'अकृतार्थान्' केने करिस् दूर? ॥ ४७ ॥

अरे—अरे; **विधि**—विधाता; **तुइ**—तुम; **बड़-इ**—अत्यन्त; **निठुर**—क्रूर; **अन्यः अन्य**—एक-दूसरे को; **दुर्लभ जन**—विरले ही मिलनेवाले; **प्रेमे**—प्रेम में; **कराञा सम्मिलन**—साथ मिलाते हो; **अकृत-अर्थान्**—असफल; **केने**—क्यों; **करिस्**—तुम करते हो; **दूर**—दूर।

अनुवाद

"रे क्रूर विधाता! तुम बड़े ही निष्ठुर हो, क्योंकि तुम ऐसे लोगों में प्रेम उत्पन्न करते हो, जो विरले ही एक दूसरे के सम्पर्क में आते हैं। और जब तुम उन्हें मिलाते हो, तो इसके पूर्व कि उनकी इच्छाएँ पूरी हों, उन्हें पुनः दूर दूर कर देते हो।

অরে বিধি অকরুণ, দেখাঞা কৃষ্ণানন,
নেত্র-মন লোভাইলা মোর ।
ক্ষণেকে করিতে পান, কাড়ি' নিলা অন্য স্থান,
পাপ কৈলি 'দত্ত-অপহার' ॥ ৪৮ ॥

अरे विधि अकरुण, देखाञा कृष्णानन,
नेत्र-मन लोभाइला मोर ।
क्षणेके करिते पान, काड़ि' निला अन्य स्थान,
पाप कैलि 'दत्त-अपहार' ॥ ४८ ॥

अरे—अरे; **विधि**—विधाता; **अकरुण**—सर्वाधिक निर्दय; **देखाञा**—दिखाकर; **कृष्ण-आनन**—कृष्ण का सुन्दर मुख; **नेत्र-मन**—मन तथा आँखें; **लोभाइला**—लुभाकर; **मोर**—मेरा;

क्षणेके करिते पान—क्षणभर के लिए पान करके; **काड़ि' निला**—वापस ले लिया; **अन्य स्थान**—अन्य स्थान पर; **पाप कैलि**—बहुत पापमय काम किया; **दत्त-अपहार**—दान में दी हुई चीज वापस लेकर।

अनुवाद

"रे विधाता, तुम कितने निर्दय हो! तुम कृष्ण का सुन्दर मुख प्रकट करते हो और मन तथा आँखों को लुभाते हो, किन्तु वे क्षणभर भी उस अमृत का पान नहीं कर पाते कि तुम कृष्ण को दूसरे स्थान पर भगा देते हो। यह बहुत बड़ा पाप है, क्योंकि इस तरह से तुम दान दी हुई वस्तु को छीन लेते हो।

'अक्रूर करे तोमार दोष, आमाय केने कर रोष',
इहा यदि कह 'दुराचार' ।
तुइ अक्रूर-मूर्ति धरि', कृष्ण निलि चुरि करि',
अन्येर नहे ऐछे व्यवहार ॥ ४९ ॥

'अक्रूर करे तोमार दोष, आमाय केने कर रोष',
इहा यदि कह 'दुराचार' ।
तुइ अक्रूर-मूर्ति धरि', कृष्ण निलि चुरि करि',
अन्येर नहे ऐछे व्यवहार ॥ ४९ ॥

अक्रूर—अक्रूर; **करे**—किया; **तोमार दोष**—तुम्हारा दोष; **आमाय**—मुझे; **केने**—क्यों; **कर**—तुम करते हो; **रोष**—क्रोध; **इहा**—यह; **यदि**—यदि; **कह**—तुम कहो; **दुराचार**—हे दुराचारी (विधाता); **तुइ**—तुम; **अक्रूर-मूर्ति धरि'**—अक्रूर का रूप धारण करके; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **निलि**—तुमने लिया है; **चुरि करि'**—चुराया; **अन्येर**—अन्यों का; **नहे**—नहीं है; **ऐछे**—इस प्रकार का; **व्यवहार**—आचरण।

अनुवाद

"ऐ दुराचारी विधाता! यदि तुम हमसे कहो कि, 'अक्रूर ही सचमुच दोषी है; तुम मुझ पर क्यों क्रोधित हो?" तो मैं तुमसे कहती हूँ, 'रे विधाता, तुम्हीं ने अक्रूर का रूप धारण करके कृष्ण को चुरा लिया है। अन्य कोई व्यक्ति ऐसा व्यवहार नहीं करता।'

আপনার কর্ম-দোষ, তোরে কিবা করি রোষ,
তোয়-মোয় সম্বন্ধ বিদূর ।
যে আমার প্রাণ-নাথ, একত্র রহি যাঁর সাথ,
সেই কৃষ্ণ হ-ইলা নিঠুর! ॥৫০॥

आपनार कर्म-दोष, तोरे किबा करि रोष,
तोय-मोय सम्बन्ध विदूर ।
ये आमार प्राण-नाथ, एकत्र रहि याँर साथ,
सेइ कृष्ण ह-इला निठुर! ॥५०॥

आपनार कर्म-दोष—यह मेरे अपने भाग्य का दोष है; **तोरे**—तुम पर; **किबा**—क्या; **करि रोष**—मैं आक्षेप करूँ; **तोय-मोय**—तुम और मेरे बीच; **सम्बन्ध**—सम्बन्ध; **विदूर**—दूर का; **ये**—वे ही हैं; **आमार**—मेरे; **प्राण-नाथ**—प्राणनाथ; **एकत्र**—साथ-साथ; **रहि**—हम रहते हैं; **याँर साथ**—जिनके साथ; **सेइ कृष्ण**—वे कृष्ण; **ह-इला निठुर**—क्रूर हो गये हैं।

अनुवाद

"किन्तु यह तो मेरे ही भाग्य का दोष है। मैं तुम पर व्यर्थ ही आक्षेप क्यों करूँ? तुम्हारे तथा मेरे बीच कोई घनिष्ठता नहीं है। किन्तु कृष्ण तो मेरे प्राण तथा आत्मा हैं। हम एक साथ रहने वाले हैं, किन्तु वे ही हैं, जो अब इतने क्रूर बन गये हैं।

সব ত্যজি' ভজি যাঁরে, সেই আপন-হাতে মারে,
নারী-বধে কৃষ্ণের নাহি ভয় ।
তাঁর লাগি' আমি মরি, উলটি' না চাহে হরি,
ক্ষণ-মাত্রে ভাঙ্গিল প্রণয় ॥৫১॥

सब त्यजि' भजि याँरे, सेइ आपन-हाते मारे,
नारी-वधे कृष्णेर नाहि भय ।
ताँर लागि' आमि मरि, उलटि' ना चाहे हरि,
क्षण-मात्रे भाङ्गिल प्रणय ॥५१॥

सब त्यजि'—सब कुछ त्यागकर; **भजि याँरे**—जिसकी मैं पूजा करती हूँ; **सेइ**—वह व्यक्ति; **आपन-हाते**—अपने ही हाथ से; **मारे**—मारता है; **नारी-वधे**—स्त्री को मारने में; **कृष्णेर**—कृष्ण का; **नाहि भय**—डर नहीं है; **ताँर लागि'**—उनके लिए; **आमि मरि**—मैं

मरती हूँ; **उलटि'**—मूडकर; **ना चाहे हरि**—कृष्ण देखते नहीं; **क्षण-मात्रे**—क्षणभर में; **भाङ्गिल**—तोड़ दिया; **प्रणय**—सारे प्रेम व्यवहार को।

अनुवाद

"जिनके लिए मैंने अपना सब कुछ त्याग दिया, वे ही मुझे अपने हाथों से मार रहे हैं। कृष्ण को स्त्रियों का वध करते हुए कोई डर नहीं लगता। निस्सन्देह, मैं उन पर मर रही हूँ, किन्तु वे मेरी ओर मुड़कर देखते तक नहीं। उन्होंने क्षणभर में हमारे प्रेम व्यापार को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है।

কৃষ্ণে কেনে করি রোষ, আপন দুর্দৈব-দোষ,
পাকিল মোর এই পাপ-ফল ।
যে কৃষ্ণ—মোর প্রেমাধীন, তারে কৈল উদাসীন,
এই মোর অভাগ্য প্রবল'' ॥৫২॥

কৃষ্ণে কেনে করি রোষ, আপন দুর্দৈব-দোষ,
পাকিল মোর এই পাপ-ফল ।
যে কৃষ্ণ—মোর প্রেমাধীন, তারে কৈল উদাসীন,
এই মোর অভাগ্য প্রবল" ॥৫২॥

কৃষ্ণে—कृष्ण पर; **केने**—क्यों; **करि रोष**—मैं रोष करूँ; **आपन**—मेरे अपने; **दुर्दैव**—दुर्भाग्य का; **दोष**—दोष; **पाकिल**—पक गया है; **मोर**—मेरा; **एइ**—यह; **पाप-फल**—पापफल; **से**—वह; **कृष्ण**—कृष्ण; **मोर**—मेरे; **प्रेम-अधीन**—प्रेम के अधीन; **तारे**—उनको; **कैल**—किया है; **उदासीन**—उदासीन; **एइ मोर**—यह मेरा है; **अभाग्य**—दुर्भाग्य; **प्रबल**—अत्यन्त प्रबल।

अनुवाद

"फिर भी, मैं कृष्ण पर क्यों रुष्ट होऊँ? यह तो मेरे अपने दुर्भाग्य का दोष है। मेरे पापकर्मों का फल पक चुका है, इसलिए वे कृष्ण जो सदैव मेरे प्रेम के वश में रहते थे, अब मेरे प्रति उदासीन हैं। इसका अर्थ यही है कि मेरा दुर्भाग्य अत्यन्त प्रबल है।"

এই-মত গৌর-রায়, বিষাদে করে হায় হায়,
'হা হা কৃষ্ণ, তুমি গেলা কতি?' ।

গোপী-ভাব হৃদয়ে, তার বাক্যে বিলাপয়ে,
'গোবিন্দ দামোদর মাধবেতি' ॥৫৩॥

এइ-মত গৌর-রায়, বিষাদে করে হায় হায়,
'হা হা কৃষ্ণ, তুমি গেলা কতি?' ।
গোপী-ভাব হৃদয়ে, তার বাক্যে বিলাপয়ে,
'গোবিন্দ দামোদর মাধবেতি' ॥৫৩॥

এइ-মত—इस प्रकार; **गौर-राय**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **विषादे**—विरह के कारण शोक से; **करे हाय हाय**—सदैव कहते "हाय, हाय"; **हा हा कृष्ण**—हा हा, कृष्ण; **तुमि गेला कति**—आप कहाँ चले गये हैं; **गोपी-भाव हृदये**—हृदय में गोपियों के प्रेमावेश के साथ; **तार वाक्ये**—उनके शब्दों में; **विलापये**—वे शोक करते; **गोविन्द दामोदर माधव**—हे गोविन्द, हे दामोदर, हे माधव; **इति**—इस प्रकार।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु विरह भाव में शोक करते, "हाय, हाय! हे कृष्ण, आप कहाँ चले गये हैं?" श्री चैतन्य महाप्रभु अपने हृदय में गोपियों के भावों को अनुभव करते हुए "हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!" जैसे उनके शब्दों से अपनी पीड़ा व्यक्त करते।

তবে স্বরূপ-রাম-রায়, করি' নানা উপায়,
মহাপ্রভুর করে আশ্বাসন ।
গায়েন সঙ্গম-গীত, প্রভুর ফিরাইলা চিত,
প্রভুর কিছু স্থির হৈল মন ॥৫৪॥

তবে স্বরূপ-রাম-রায়, করি' নানা উপায়,
মহাপ্রভুর করে আশ্বাসন ।
গায়েন সঙ্গম-গীত, প্রভুর ফিরাইলা চিত,
প্রভুর কিছু স্থির হৈল মন ॥৫৪॥

তবে—तब; **स्वरूप-राम-राय**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय; **करि' नाना उपाय**—अनेक उपाय करके; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करे आश्वासन**—शान्त किया; **गायेन**—उन्होंने गाये; **सङ्गम-गीत**—मिलन के गीत; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **फिराइला चित**—हृदय परिवर्तित हुआ; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **किछु**—कुछ; **स्थिर**—शान्त; **हैल**—हो गया; **मन**—मन।

अनुवाद

तब स्वरूप दामोदर तथा रामानन्द राय ने महाप्रभु को सान्त्वना देने के लिए तरह-तरह के उपाय किये। उन्होंने मिलाप के गीत गाये, जिनसे उनका हृदय परिवर्तित हुआ और उनका मन शान्त हो गया।

এই-মত বিলপিতে অর্ধ-রাত্রি গেল ।
গম্ভীরাতে স্বরূপ-গোসাঞি প্রভুরে শোয়াইল ॥৫৫॥

এइ-মত বিলপিতে অর্ধ-রাত্রি গেল ।
গম্ভীরাতে স্বরূপ-গোসাঞি প্রভুরে শোয়াইল ॥৫৫॥

एइ-मत—इस प्रकार; **विलपिते**—विलाप करते हुए; **अर्ध-रात्रि गेल**—आधी रात बीत गई; **गम्भीराते**—गम्भीरा नामक कमरे में; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **प्रभुरे शोयाइल**—महाप्रभु को सुला दिया।

अनुवाद

इस तरह से श्री चैतन्य महाप्रभु को विलाप करते-करते आधी रात बीत गई। तब स्वरूप दामोदर ने उन्हें गम्भीरा नामक कमरे में सुला दिया।

প্রভুরে শোয়াঞা রামানন্দ গেলা ঘরে ।
স্বরূপ, গোবিন্দ শুইলা গম্ভীরার দ্বারে ॥৫৬॥

প্রভুরে শোয়াঞা রামানন্দ গেলা ঘরে ।
স্বরূপ, গোবিন্দ শুইলা গম্ভীরার দ্বারে ॥৫৬॥

प्रभुरे—श्री चैतन्य महाप्रभु; **शोयाञा**—सुला दिया गया; **रामानन्द**—रामानन्द राय; **गेला घरे**—अपने घर लौट गये; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **गोविन्द**—गोविन्द; **शुइला**—लेट गये; **गम्भीरार द्वारे**—गम्भीरा के दरवाजे पर।

अनुवाद

जब महाप्रभु को सुला दिया गया, तो रामानन्द राय अपने घर चले गये और स्वरूप दामोदर तथा गोविन्द गम्भीरा के दरवाजे पर लेट गये।

প্রেমাবেশে মহাপ্রভুর গর-গর মন ।
নাম-সঙ্কীর্তন করি' করেন জাগরণ ॥৫৭॥

प्रेमावेशे महाप्रभुर गर-गर मन ।
नाम-सङ्कीर्तन करि' करेन जागरण ॥५७॥

प्रेम-आवेशे—प्रेमावेश में; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **गर-गर मन**—मन पूर्णतया अभिभूत था; **नाम-सङ्कीर्तन करि'**—हरे कृष्ण महामन्त्र का जप करते हुए; **करेन**—किया; **जागरण**—जागरण।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु का मन आध्यात्मिक आनन्द से अभिभूत था, इसलिए वे हरे कृष्ण महामन्त्र का जप करते हुए सारी रात जागते रहे।

বিরহে ব্যাকুল প্রভু উদ্বেগে উঠিলা ।
গম্ভীরার ভিত্ত্যে মুখ ঘষিতে লাগিলা ॥৫৮॥

विरहे व्याकुल प्रभु उद्वेगे उठिला ।
गम्भीरार भित्त्ये मुख घषिते लागिला ॥५८॥

विरहे—विरह के शोक में; **व्याकुल**—अत्यन्त व्याकुल; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **उद्वेगे**—अत्यन्त उद्वेग में; **उठिला**—उठ खड़े हुए; **गम्भीरार**—गम्भीर की; **भित्त्ये**—दीवारों पर; **मुख**—मुख; **घषिते**—रगड़ने; **लागिला**—लगे।

अनुवाद

कृष्ण से विरह का अनुभव करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु इतने किंकर्तव्यमूढ़ हो गये कि वे उस महान् चिन्ता में उठ खड़े हुए और गम्भीरा की दीवालों पर अपना मुख रगड़ने लगे।

মুখে, গণ্ডে, নাকে ক্ষত হ-ইল অপার ।
ভাবাবেশে না জানেন প্রভু, পড়ে রক্ত-ধার ॥৫৯॥

मुखे, गण्डे, नाके क्षत ह-इल अपार ।
भावावेशे ना जानेन प्रभु, पड़े रक्त-धार ॥५९॥

मुखे—मुख पर; **गण्डे**—गाल पर; **नाके**—नाक पर; **क्षत**—घाव; **ह-इल**—हो गये; **अपार**—अनेक; **भाव-आवेशे**—भावावेश में; **ना जानेन**—नहीं जान सके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पड़े**—बहने लगी; **रक्त-धार**—रक्त की धारा।

अनुवाद

उनके मुँह, नाक तथा गालों में हुए अनेक घावों से रक्त निकलने लगा, किन्तु अपने भावावेश के कारण महाप्रभु को इसका पता नहीं चल पाया।

सर्व-रात्रि करेन भावे मुख सङ्घर्षण ।
गोँ-गोँ-शब्द करेन,—स्वरूप शुनिला तखन ॥६०॥

सर्व-रात्रि करेन भावे मुख सङ्घर्षण ।
गों-गों-शब्द करेन,—स्वरूप शुनिला तखन ॥६०॥

सर्व-रात्रि—सारी रात; **करेन**—किया; **भावे**—भाव में; **मुख सङ्घर्षण**—मुख का रगड़ना; **गों-गों-शब्द करेन**—गों गों की विचित्र आवाज; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **शुनिला**—सुनते थे; **तखन**—तब।

अनुवाद

भावावेश में श्री चैतन्य महाप्रभु सारी रात दीवालों पर अपना मुख रगड़ते रहे और गों गों का विचित्र शब्द निकालते रहे, जिसे स्वरूप दामोदर दरवाजे से सुन सकते थे।

दीप ज्वालि' घरे गेला, देखि' प्रभुर मुख ।
स्वरूप, गोविन्द दुँहार हैल बड़ दुःख ॥६१॥

दीप ज्वालि'—दीपक जलाकर; **घरे**—कमरे में; **गेला**—गये; **देखि'**—देखकर; **प्रभुर मुख**—महाप्रभु का चेहरा; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **गोविन्द**—तथा गोविन्द; **दुँहार**—दोनों को; **हैल बड़ दुःख**—बहुत दुःख हुआ।

अनुवाद

तब दीपक जलाकर स्वरूप दामोदर तथा गोविन्द ने उस कमरे में प्रवेश किया। जब उन्होंने महाप्रभु का चेहरा देखा, तो दोनों ही अत्यन्त दुःखी हो गये।

প্রভুরে শয্যাতে আনি' সুস্থির করাইলা ।
'কাঁহে কৈলা এই তুমি?'—স্বরূপ পুছিলা ॥৬২॥

প্রভুরে শয্যাতে আনি' সুস্থির করাইলা ।
'কাঁহে কৈলা এइ তুমি?'—স্বরূপ পুছিলা ॥৬২॥

প্রভুরে—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু; **শয্যাতে**—বিস্তর পর; **আনি'**—লাकर; **সু-স্থির করাইলা**—उन्हें शान्त किया; **কাঁহে**—क्यों; **কৈলা**—किया है; **এइ**—यह; **তুমি**—आपने; **স্বরূপ পুছিলা**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने पूछा।

अनुवाद

वे महाप्रभु को उनके बिस्तर पर ले आये, उन्हें शान्त किया और तब पूछा, "आपने अपने साथ यह क्या कर रखा है?"

প্রভু কহেন,—"উদ্বেগে ঘরে না পারি রহিতে ।
দ্বার চাহি' বুলি' শীঘ্র বাহির হ-ইতে ॥৬৩॥

প্রভু কহেন,—"উদ্বেগে ঘরে না পারি রহিতে ।
দ্বার চাহি' বুলি' শীঘ্র বাহির হ-ইতে ॥৬৩॥

প্রভু কহেন—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **উদ্বেগে**—अत्यन्त उद्वेग के कारण; **ঘরে**—कमरे में; **না পারি**—में समर्थ नहीं था; **রহিতে**—रहने में; **দ্বার চাহি'**—दरवाजे को खोजते हुए; **বুলি'**—घूमते हुए; **শীঘ্র**—जल्दी; **বাহির হ-ইতে**—बाहर जाने के लिए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "मैं इतने उद्वेग में था कि मैं कमरे में ठहर नहीं सकता था। मैं बाहर जाना चाहता था, इसलिए दरवाजे की खोज में कमरे में इधर-उधर घूमने लगा।

দ্বার নাহি' পাঞা মুখ লাগে চারি-ভিতে ।
ক্ষত হয়, রক্ত পড়ে, না পাই যাইতে'' ॥৬৪॥

দ্বার নাহি' পাঞা মুখ লাগে চারি-ভিতে ।
ক্ষত হয়, রক্ত পড়ে, না পাই যাইতে" ॥৬৪॥

দ্বার নাহি' পাঞা—दरवाजा न ढूँढ पाने के कारण; **মুখ লাগে**—चेहरा पटका; **চারি-**

भिते—चारों दिवारों पर; **क्षत हय**—घायल हुआ; **रक्त पड़े**—खून निकला; **ना पाइ ग्राइते**—फिर भी मैं बाहर नहीं जा सका।

अनुवाद

"दरवाजा न ठूँठ सकने के कारण मैं अपना मुँह चारों दीवारों पर पटकता रहा। इससे मेरा मुँह घायल हो गया और रक्त बहने लगा, फिर भी मैं बाहर न जा सका।"

उन्माद-दशाय प्रभुर स्थिर नहे मन ।
येइ करे, येइ बोले सब,—उन्माद-लक्षण ॥ ६५ ॥

उन्माद-दशाय प्रभुर स्थिर नहे मन ।
ग्रेइ करे, ग्रेइ बोले सब,—उन्माद-लक्षण ॥ ६५ ॥

उन्माद-दशाय—ऐसी उन्माद की अवस्था में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **स्थिर नहे मन**—मन स्थिर नहीं था; **ग्रेइ करे**—वे जो भी करते; **ग्रेइ बोले**—वे जो भी बोलते; **सब**—सब; **उन्माद-लक्षण**—केवल उन्माद के लक्षण।

अनुवाद

उन्माद की इस अवस्था में श्री चैतन्य महाप्रभु का मन अस्थिर था। वे जो भी कहते या करते, वह सब उन्माद का लक्षण था।

स्वरूप-गोसाञि तबे चिन्ता पाइला मने ।
भक्त-गण लञा विचार कैला आर दिने ॥ ६६ ॥

स्वरूप-गोसाञि तबे चिन्ता पाइला मने ।
भक्त-गण लञा विचार कैला आर दिने ॥ ६६ ॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **तबे**—तब; **चिन्ता**—चिन्ता या विचार; **पाइला मने**—उनके मन में आया; **भक्त-गण लञा**—सब भक्तों के साथ; **विचार कैला**—विचार किया; **आर दिने**—दूसरे दिन।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर अत्यधिक चिन्तित थे, किन्तु तभी उनके मन में एक विचार आया। अगले दिन, उन्होंने अन्य भक्तों से मिलकर इस पर विचार किया।

सब भक्त मेलि' तबे प्रभुरे साधिल ।
शङ्कर-पण्डिते प्रभुर सङ्गे शोयाइल ॥ ६७ ॥

सब भक्त मेलि' तबे प्रभुरे साधिल ।
शङ्कर-पण्डिते प्रभुर सङ्गे शोयाइल ॥ ६७ ॥

सब भक्त मेलि'—सब भक्त साथ मिलकर; **तबे**—तब; **प्रभुरे साधिल**—श्री चैतन्य महाप्रभु से विनति की; **शङ्कर-पण्डिते**—शंकर पण्डित; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सङ्गे**—साथ; **शोयाइल**—सुलाया।

अनुवाद

परस्पर विचार-विमर्श करने के बाद सबों ने श्री चैतन्य महाप्रभु से विनती की कि वे अपने साथ उस कमरे में शंकर पंडित को भी लेटने दें।

प्रभु-पाद-तले शङ्कर करेन शयन ।
प्रभु ताँर उपर करेन पाद-प्रसारण ॥ ६८ ॥

प्रभु-पाद-तले शङ्कर करेन शयन ।
प्रभु ताँर उपर करेन पाद-प्रसारण ॥ ६८ ॥

प्रभु-पाद-तले—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों के पास; **शङ्कर**—शंकर; **करेन शयन**—लेट जाते; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँर**—उसके; **उपर**—शरीर पर; **करेन**—करते; **पाद-प्रसारण**—पैरों का विस्तार।

अनुवाद

इस तरह शंकर पंडित श्री चैतन्य महाप्रभु के पाँवों के पास लेटता और महाप्रभु अपने पाँव शंकर के शरीर पर रखते।

'प्रभु-पादोपाधान' बलि' ताँर नाम ह-इल ।
पूर्वे विदुरे येन श्री-शुक वर्णिल ॥ ६९ ॥

'प्रभु-पादोपाधान' बलि' ताँर नाम ह-इल ।
पूर्वे विदुरे येन श्री-शुक वर्णिल ॥ ६९ ॥

प्रभु-पाद-उपाधान—श्री चैतन्य महाप्रभु के पैरों का तकिया; **बलि'**—के नाम से कहे जाने वाले; **ताँर नाम**—उनका नाम; **ह-इल**—हो गया; **पूर्वे**—पहले; **विदुरे**—विदुर; **येन**—जैसे; **श्री-शुक वर्णिल**—श्री शुकदेव गोस्वामी ने वर्णन किया है।

अनुवाद

शंकर प्रभु-पादोयधान अर्थात् "श्री चैतन्य महाप्रभु का तकिया" के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे विदुर के समान थे, जैसाकि शुकदेव गोस्वामी इसके पूर्व उनका वर्णन कर चुके हैं।

इति ब्रुवाणं विदुरं विनीतं
सहस्र-शीर्ष्णश्चरणोपधानम् ।
प्रहृष्ट-रोमा भगवत्कथायां
प्रणीयमानो मुनिरभ्यचष्ट ॥७०॥

इति ब्रुवाणं विदुरं विनीतं
सहस्र-शीर्ष्णश्चरणोपधानम् ।
प्रहृष्ट-रोमा भगवत्कथायां
प्रणीयमानो मुनिरभ्यचष्ट ॥७०॥

इति—इस प्रकार; **ब्रुवाणम्**—बोलते हुए; **विदुरम्**—विदुर से; **विनीतम्**—नम्रता से; **सहस्र-शीर्ष्णः**—भगवान् कृष्ण का; **चरण-उपधानम्**—पैरों का तकिया; **प्रहृष्ट-रोमा**—शरीर में रोमांच हो आया; **भगवत्-कथायाम्**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की कथा में; **प्रणीयमानः**—प्रेरित होकर; **मुनिः**—महामुनि मैत्रेय; **अभ्यचष्ट**—कहने लगे।

अनुवाद

"जब भगवान् कृष्ण के चरणों के रखने के स्थान रूप विनीत विदुर जी मैत्रेय से इस प्रकार कह चुके, तो मैत्रेय ने बोलना प्रारम्भ किया। भगवान् कृष्ण विषयक कथाओं की चर्चा से उत्पन्न दिव्य आनन्द के कारण उनको रोमांच हो आया।"

तात्पर्य

यह उद्धरण *श्रीमद्भागवत* (३.१३.५) से है।

শঙ্কর করেন প্রভুর পাদ-সম্বাহন ।
ঘুমাঞা পড়েন, তৈছে করেন শয়ন ॥৭১॥

শঙ্কর করেন প্রভুর পাদ-সম্বাহন ।
ঘুমাঞা পড়েন, তৈছে করেন শয়ন ॥৭১॥

शङ्कर—शंकर; **करेन**—करते; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पाद-सम्वाहन**—पाँव दबाते; **घुमाञा पड़ेन**—सो जाते; **तैछे**—इस प्रकार; **करेन शयन**—लेट जाते।

अनुवाद

शंकर श्री चैतन्य महाप्रभु के पाँव दबाते, किन्तु पाँव दबाते-दबाते सोने लगते और इस प्रकार लेट जाते।

उघाड़-अङ्गे पड़िया शङ्कर निद्रा याय ।
प्रभु उठि' आपन-काँथा ताहारे जड़ाय ॥७२॥

उघाड़-अङ्गे पड़िया शङ्कर निद्रा याय ।
प्रभु उठि' आपन-काँथा ताहारे जड़ाय ॥७२॥

उघाड़-अङ्गे—शरीर को बिना ढके ही; **पड़िया**—लेट जाते; **शङ्कर**—शंकर; **निद्रा याय**—सो जाते; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **उठि'**—उठकर; **आपन-काँथा**—अपनी रजाई; **ताहारे जड़ाय**—उन पर डाल देते।

अनुवाद

वे शरीर को बिना ढ़के ही सोते रहते और श्री चैतन्य महाप्रभु जगकर उन पर अपनी रजाई डाल देते।

निरन्तर घुमाय शङ्कर शीघ्र-चेतन ।
वसि' पाद चापि' करे रात्रि-जागरण ॥७३॥

निरन्तर घुमाय शङ्कर शीघ्र-चेतन ।
वसि' पाद चापि' करे रात्रि-जागरण ॥७३॥

निरन्तर—निरन्तर; **घुमाय**—सो जाते; **शङ्कर**—शंकर; **शीघ्र**—शीघ्र ही; **चेतन**—जाग जाते; **वसि'**—बैठकर; **पाद चापि'**—पाँव दबाने लगते; **करे**—करते; **रात्रि-जागरण**—रात को जगते रहते।

अनुवाद

शंकर पंडित सदा सो तो जाते थे, किन्तु शीघ्र ही जागकर बैठ जाते और पुनः श्री चैतन्य महाप्रभु के पाँव दबाने लगते। इस तरह वे पूरी रात जागते रहते।

তাঁর ভয়ে নারেন প্রভু বাহিরে যাইতে ।
তাঁর ভয়ে নারেন ভিত্ত্যে মুখাব্জ ঘষিতে ॥৭৪॥

তাঁর ভয়ে নারেন প্রভু বাহিরে য়াইতে ।
তাঁর ভয়ে নারেন ভিত্ত্যে মুখাব্জ ঘষিতে ॥৭৪॥

তাঁর ভয়ে—উনके भय से; **নারেন**—समर्थ नहीं थे; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **বাহিরে য়াইতে**—बाहर जाने के लिए; **তাঁর ভয়ে**—उनके भय से; **নারেন**—समर्थ नहीं थे; **ভিত্ত্যে**—दीवारों पर; **মুখ-অব্জ ঘষিতে**—कमल समान मुख रगड़ने के लिए।

अनुवाद

शंकर के भय से श्री चैतन्य महाप्रभु न तो अपना कमरा छोड़ते, न ही अपने कमल सदृश मुँह को दीवालों पर रगड़ते।

এই লীলা মহাপ্রভুর রঘুনাথ-দাস ।
গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্পবৃক্ষে করিয়াছে প্রকাশ ॥৭৫॥

এই লীলা মহাপ্রভুর রঘুনাথ-দাস ।
গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্পবৃক্ষে করিয়াছে প্রকাশ ॥৭৫॥

এই লীলা—यह लीला; **মহাপ্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **রঘুনাথ-দাস**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্প-বৃক্ষে**—*गौराङ्ग स्तव कल्पवृक्ष* नामक अपने ग्रन्थ में; **করিয়াছে প্রকাশ**—अच्छी तरह से वर्णन किया है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की इस लीला का बहुत ही सुन्दर वर्णन रघुनाथ दास गोस्वामी ने अपनी पुस्तक 'गौराङ्ग स्तव कल्पवृक्ष' में किया है।

স্বকীয়স্য প্রাণার্বুদ-সদৃশ-গোষ্ঠস্য বিরহাৎ
প্রলাপানুন্মাদাজ্জততমতি কুর্বন্বিকল-ধীঃ ।
দধদ্ভিত্তৌ শশ্বদ্বদন-বিধু-ঘর্ষেণ রুধিরং
ক্ষতোত্থং গৌরাঙ্গো হৃদয় উদয়ন্মাং মদয়তি ॥৭৬॥

স্বকীয়স্য প্রাণার্বুদ-সদৃশ-গোষ্ঠস্য বিরহাৎ
প্রলাপানুন্মাদাৎসততমতি কুর্বন্বিকল-ধীঃ ।

दधद्भित्तौ शश्वद्वदन-विधु-घर्षेण रुधिरं
क्षतोत्थं गौराङ्गो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ ७६ ॥

स्वकीयस्य—अपने; **प्राण-अर्बुद**—जीवन की अनगिनत श्वास; **सदृश**—समान; **गोष्ठस्य**—वृन्दावन के; **विरहात्**—विरह के कारण; **प्रलापान्**—प्रलाप; **उन्मादात्**—उन्माद के कारण; **सततम्**—सदैव; **अति**—अत्यन्त; **कुर्वन्**—करके; **विकल-धीः**—जिनकी बुद्धि विक्षिप्त थी; **दधत्**—बहता था; **भित्तौ**—दीवारों पर; **शश्वत्**—सदैव; **वदन-विधु**—कमल समान मुख को; **घर्षेण**—रगड़ने से; **रुधिरम्**—खून; **क्षत-उत्थम्**—घावों से निकलता था; **गौराङ्गः**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हृदये**—मेरे हृदय में; **उदयन्**—उदित हों; **माम्**—मेरे; **मदयति**—उन्मत्त।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु अपने प्राणतुल्य वृन्दावन अनेक मित्रों के विरह के कारण उन्मत की तरह बातें करते। उनकी बुद्धि विकृत हो गई थी। वे दिन-रात अपने चन्द्रमा सदृश मुखड़े को दीवालों पर रगड़ते, जिससे घावों से रक्त बहता रहता। ऐसे श्री चैतन्य महाप्रभु मेरे हृदय में उदित हों और मुझे प्रेम से उन्मत्त कर दें।"

এই-মত মহাপ্রভু রাত্রি-দিবসে ।
প্রেম-সিন্ধু-মগ্ন রহে, কভু ডুবে, ভাসে ॥ ৭৭ ॥

এइ-मत महाप्रभु रात्रि-दिवसे ।
प्रेम-सिन्धु-मग्न रहे, कभु डुबे, भासे ॥ ७७ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रात्रि-दिवसे**—दिन-रात; **प्रेम-सिन्धु-मग्न रहे**—कृष्ण-प्रेम के सागर में निमग्न; **कभु डुबे**—कभी डूब जाते; **भासे**—कभी तैरते।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु रात-दिन कृष्ण के प्रेम रूपी सिन्धु में मग्न रहते। कभी वे डूबे रहते और कभी तैरते रहते।

এক-কালে বৈশাখের পৌর্ণমাসী-দিনে ।
রাত্রি-কালে মহাপ্রভু চলিলা উদ্যানে ॥ ৭৮ ॥

एक-काले वैशाखेर पौर्णमासी-दिने ।
रात्रि-काले महाप्रभु चलिला उद्याने ॥७८॥

एक-काले—एक बार; **वैशाखेर**—वैशाख (अप्रैल-मई) मास की; **पौर्णमासी-दिने**—पूर्णमासी की रात को; **रात्रि-काले**—रात में; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चलिला**—गये; **उद्याने**—उद्यान में।

अनुवाद

एक बार वैशाख (अप्रैल-मई) मास की पूर्णमासी की रात में श्री चैतन्य महाप्रभु एक उद्यान में गये।

'जगन्नाथ-वल्लभ' नाम उद्यान-प्रधाने ।
प्रवेश करिला प्रभु लञा भक्त-गणे ॥७९॥

'जगन्नाथ-वल्लभ' नाम उद्यान-प्रधाने ।
प्रवेश करिला प्रभु लञा भक्त-गणे ॥७९॥

जगन्नाथ-वल्लभ—जगन्नाथ-वल्लभ; **नाम**—नामक; **उद्यान-प्रधाने**—उत्तम उद्यानों में से एक; **प्रवेश करिला**—प्रविष्ट हुए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा**—लेकर; **भक्त-गणे**—भक्तों को।

अनुवाद

महाप्रभु अपने भक्तों सहित जगन्नाथ-वल्लभ नामक सुन्दरतम उद्यान में प्रविष्ट हुए।

प्रफुल्लित वृक्ष-वल्ली,—येन वृन्दावन ।
शुक, शारी, पिक, भृङ्ग करे आलापन ॥८०॥

प्रफुल्लित वृक्ष-वल्ली,—ग्रेन वृन्दावन ।
शुक, शारी, पिक, भृङ्ग करे आलापन ॥८०॥

प्रफुल्लित—पूर्णतया खीले हुए; **वृक्ष-वल्ली**—वृक्ष तथा लताएँ; **ग्रेन वृन्दावन**—वृन्दावन के समान ही; **शुक**—शुक पक्षी; **शारी**—शारी पक्षी; **पिक**—पिक पक्षी; **भृङ्ग**—भौंरे; **करे**—करते थे; **आलापन**—एक-दूसरे से बातें।

अनुवाद

इस उद्यान में फूलों से लदे वृक्ष तथा लताएँ वृन्दावन जैसे ही थे। भौंरे, शुक, शारी एवं पिक पक्षी एक दूसरे से बातें कर रहे थे।

पुष्प-गन्ध लञा वहे मलय-पवन ।
'गुरु' हञा तरु-लताय शिखाय नाचन ॥८१॥

पुष्प-गन्ध लञा वहे मलय-पवन ।
'गुरु' हञा तरु-लताय शिखाय नाचन ॥८१॥

पुष्प-गन्ध—पुष्पों की सुगन्ध; **लञा**—लेकर; **वहे**—बहती थी; **मलय-पवन**—मन्द पवन; **गुरु हञा**—गुरु बनकर; **तरु-लताय**—वृक्ष तथा लताओं को; **शिखाय**—सीखा रही थी; **नाचन**—नृत्य।

अनुवाद

मन्द पवन सुगन्धित पुष्पों की गन्ध लेकर बह रही थी। यह पवन गुरु बनकर सारे वृक्षों तथा लताओं को नृत्य सिखा रही थी।

पूर्ण-चन्द्र-चन्द्रिकाय परम उज्ज्वल ।
तरु-लतादि ज्योत्स्नाय करे झलमल ॥८२॥

पूर्ण-चन्द्र-चन्द्रिकाय परम उज्ज्वल ।
तरु-लतादि ज्योत्स्नाय करे झलमल ॥८२॥

पूर्ण-चन्द्र—पूर्ण चन्द्रमा की; **चन्द्रिकाय**—चाँदनी से; **परम**—अत्यन्त; **उज्ज्वल**—उज्ज्वल; **तरु-लता-आदि**—लताएं, वृक्ष इत्यादि; **ज्योत्स्नाय**—चाँदनी के प्रकाश में; **करे**—करते थे; **झलमल**—झलमला रहे थे।

अनुवाद

पूर्ण चन्द्रमा के तेज से प्रकाशित सारे वृक्ष तथा लताएँ प्रकाश में झलमला रहे थे।

छय ऋतु-गण याहाँ वसन्त प्रधान ।
देखि' आनन्दित हैला गौर भगवान् ॥८३॥

छय ऋतु-गण याहाँ वसन्त प्रधान ।
देखि' आनन्दित हैला गौर भगवान् ॥८३॥

छय—छः; **ऋतु-गण**—ऋतुएँ; **याहाँ**—जहाँ; **वसन्त प्रधान**—वसन्त ऋतु प्रधान; **देखि'**—देखकर; **आनन्दित**—अत्यन्त प्रसन्न; **हैला**—हुए; **गौर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भगवान्**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्।

अनुवाद

ऐसा लग रहा था मानो वहाँ पर छहों ऋतुएँ, विशेषतया वसन्त ऋतु, उपस्थित हों। उस उद्यान को देखकर पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त प्रसन्न हुए।

''ललित-लवङ्ग-लता'' पद गाओयाञा ।
नृत्य करि' बुलेन प्रभु निज-गण लञा ॥८४॥
"ललित-लवङ्ग-लता" पद गाओयाञा ।
नृत्य करि' बुलेन प्रभु निज-गण लञा ॥८४॥

ललित-लवङ्ग-लता—*ललित लवंगलता* शब्दों से शुरू होने वाला; **पद**—श्लोक; **गाओयाञा**—गाने के लिए कहकर; **नृत्य करि'**—नृत्य किया; **बुलेन**—घूमे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **निज-गण लञा**—अपने पार्षदों के साथ।

अनुवाद

इस वातावरण में महाप्रभु ने अपने संगियों से 'ललित लवंगलता' से प्रारम्भ होने वाला 'गीत गोविन्द' का श्लोक गाने को कहा और वे स्वयं नृत्य करने लगे तथा उनके साथ चारों ओर घूमने लगे।

प्रति-वृक्ष-वल्ली ऐछे भ्रमिते भ्रमिते ।
अशोकेर तले कृष्णे देखेन आचम्बिते ॥८५॥
प्रति-वृक्ष-वल्ली ऐछे भ्रमिते भ्रमिते ।
अशोकेर तले कृष्णे देखेन आचम्बिते ॥८५॥

प्रति-वृक्ष-वल्ली—प्रत्येक वृक्ष तथा लता की चारों ओर; **ऐछे**—इस प्रकार; **भ्रमिते भ्रमिते**—घूमते हुए; **अशोकेर तले**—अशोक वृक्ष के नीचे; **कृष्णे**—भगवान् कृष्ण; **देखेन**—उन्होंने देखा; **आचम्बिते**—अचानक।

अनुवाद

इस तरह वे प्रत्येक वृक्ष तथा लता के चारों ओर घूमते हुए अशोक वृक्ष के नीचे आये और सहसा उन्होंने भगवान् कृष्ण को देखा।

কৃষ্ণ দেখি' মহাপ্রভু ধাঞা চলিলা ।
আগে দেখি' হাসি' কৃষ্ণ অন্তর্ধান হ-ইলা ॥ ৮৬॥

কৃষ্ণ দেখি' মহাপ্রভু ধাঞা চলিলা ।
আগে দেখি' হাসি' কৃষ্ণ অন্তর্ধান হ-ইলা ॥ ৮৬॥

কৃষ্ণ দেখি'—কৃষ্ণ को देखकर; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ধাঞা চলিলা**—तेजी से दौड़ने लगे; **আগে**—आगे; **দেখি'**—देखकर; **হাসি'**—मुसकाते हुए; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण; **অন্তর্ধান হ-ইলা**—अदृश्य हो गये।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण को देखा, तो वे तेजी से दौड़ने लगे, किन्तु कृष्ण स्मितहास्य करते हुए अदृश्य हो गये।

আগে পাইলা কৃষ্ণে, তাঁরে পুনঃ হারাঞা ।
ভূমেতে পড়িলা প্রভু মূর্চ্ছিত হঞা ॥ ৮৭॥

আগে পাইলা কৃষ্ণে, তাঁরে পুনঃ হারাঞা ।
ভূমেতে পড়িলা প্রভু মূর্চ্ছিত হঞা ॥ ৮৭॥

আগে—प्रारम्भ में; **পাইলা**—पाकर; **কৃষ্ণে**—भगवान् कृष्ण; **তাঁরে**—उनको; **পুনঃ**—फिर; **হারাঞা**—खोकर; **ভূমেতে**—भूमि पर; **পড়িলা**—गिर पड़े; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **মূর্চ্ছিত**—अचेत; **হঞা**—होकर।

अनुवाद

पहले कृष्ण को पाने तथा उसके बाद पुनः उन्हें खो देने से श्री चैतन्य महाप्रभु अचेत होकर भूमि पर गिर पड़े।

কৃষ্ণের শ্রী-অঙ্গ-গন্ধে ভরিছে উদ্যানে ।
সেই গন্ধ পাঞা প্রভু হৈলা অচেতনে ॥ ৮৮॥

কৃষ্ণের শ্রী-অঙ্গ-গন্ধে ভরিছে উদ্যানে ।
সেই গন্ধ পাঞা প্রভু হৈলা অচেতনে ॥ ৮৮॥

কৃষ্ণের—भगवान् कृष्ण की; **শ্রী-অঙ্গ-গন্ধে**—दिव्य देह की सुगन्ध; **ভরিছে**—भर गई; **উদ্যানে**—उद्यान में; **সেই গন্ধ পাঞা**—उस सुगन्ध को पाकर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **হৈলা**—हो गये; **অচেতনে**—अचेत।

अनुवाद

भगवान् श्रीकृष्ण के दिव्य शरीर की सुगन्ध से सारा उद्यान भर गया। जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस सुगन्ध को सूँघा, तो वे तुरन्त अचेत हो गये।

निरन्तर नासाय पशे कृष्ण-परिमल ।
गन्ध आस्वादिते प्रभु ह-इला पागल ॥८९॥

निरन्तर नासाय पशे कृष्ण-परिमल ।
गन्ध आस्वादिते प्रभु ह-इला पागल ॥८९॥

निरन्तर—निरन्तर; **नासाय**—नथुनों में; **पशे**—प्रवेश कर रही थी; **कृष्ण-परिमल**—कृष्ण के शरीर की सुगन्ध; **गन्ध आस्वादिते**—सुगन्ध का आस्वादन करने के लिए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ह-इला पागल**—पागल हो गये।

अनुवाद

किन्तु कृष्ण के शरीर की सुगन्ध उनके नथुनों में निरन्तर प्रवेश कर रही थी और महाप्रभु उसका आस्वादन करने के लिए उन्मत्त हो रहे थे।

कृष्ण-गन्ध-लुब्धा राधा सखीरे ये कहिला ।
सेइ श्लोक पड़ि' प्रभु अर्थ करिला ॥९०॥

कृष्ण-गन्ध-लुब्धा राधा सखीरे ये कहिला ।
सेइ श्लोक पड़ि' प्रभु अर्थ करिला ॥९०॥

कृष्ण-गन्ध—कृष्ण के शरीर की सुगन्ध; **लुब्धा**—के पीछे लालायित; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **सखीरे**—अपनी गोपी सखियों से; **ये कहिला**—उन्होंने जो कुछ कहा; **सेइ**—वह; **श्लोक**—श्लोक; **पड़ि'**—पढ़कर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **अर्थ करिला**—उसका अर्थ बताया।

अनुवाद

श्रीमती राधारानी ने अपनी गोपी सखियों से एक बार बतलाया कि वे किस तरह कृष्ण के शरीर की दिव्य सुगन्ध के लिए लालायित हो रही हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसी श्लोक को पढ़ा और उसका अर्थ स्पष्ट किया।

कुरङ्ग-मद-जिद्वपुः-परिमलोर्मि-कृष्टाङ्गनः
स्वकाङ्ग-नलिनाष्टके शशि-युताब्ज-गन्ध-प्रथः ।
मदेन्दुवर-चन्दनागुरु-सुगन्धि-चर्चार्चितः
स मे मदन-मोहनः सखि तनोति नासा-स्पृहाम् ॥९१॥

कुरङ्ग-मद-जित्—कस्तूरी की सुगन्ध को परास्त करने वाली; **वपुः**—उनके दिव्य शरीर की; **परिमल-ऊर्मि**—सुगन्ध की लहरों से; **कृष्ट-अङ्गनः**—वृन्दावन की गोपियों को आकर्षित करके; **स्वक-अङ्ग-नलिन-अष्टके**—शरीर के आठ कमल समान अंगों पर (मुख, नाभि, आँखें, हथेलियाँ तथा चरण); **शशि-युत-अब्ज-गन्ध-प्रथः**—जो कपूर से मिश्रित कमल की सुगन्ध को वितरित करते हैं; **मद-इन्दुवर-चन्दन-अगुरु-सुगन्धि-चर्चा-अर्चितः**—कस्तूरी, कपूर, श्वेत चन्दन तथा अगरु के लेप से लेपित; **सः**—वे; **मे**—मेरे; **मदन-मोहनः**—भगवान् कृष्ण, जो कामदेव को भी मोहित करने वाले हैं; **सखि**—हे प्रिय सखी; **तनोति**—बढ़ाती है; **नासा-स्पृहाम्**—मेरे नथुनों की इच्छा को।

अनुवाद

"'कृष्ण के दिव्य शरीर की सुगन्ध कस्तूरी की सुगन्ध को भी पराजित करने वाली और समस्त स्त्रियों के मनों को आकृष्ट करने वाली है। उनके शरीर के कमल समान आठ अंग कमल के साथ कपूर की मिश्रित सुगन्ध को वितरित करते हैं। उनके शरीर पर कस्तूरी, कपूर, चन्दन तथा अगुरु जैसी सुगन्धित वस्तुओं का लेप लगा हुआ है। हे सखी, ऐसे भगवान्, जो कि मदनमोहन भी कहे जाते हैं, सदैव मेरे नथुनों की इच्छा को वर्धित करते हैं।'"

तात्पर्य

यह श्लोक *गोविन्द लीलामृत* (८.६) में पाया जाता है।

কস্তূরিকা-নীলোৎপল, তার যেই পরিমল,
তাহা জিনি' কৃষ্ণ-অঙ্গ-গন্ধ ।

ব্যাপে চৌদ্দ-ভুবনে, করে সর্ব আকর্ষণে,
নারী-গণের আখি করে অন্ধ ॥৯২॥

কস্তূরিকা-নীলোৎপল, তার যেই পরিমল,
তাহা জিনি' কৃষ্ণ-অঙ্গ-গন্ধ ।
ব্যাপে চৌদ্দ-ভুবনে, করে সর্ব আকর্ষণে,
নারী-গণের আখি করে অন্ধ ॥ ৯২॥

कस्तूरिका—कस्तूरी; **नीलोत्पल**—नीलकमल के साथ मिश्रित; **तार**—उसकी; **येइ**—जो भी; **परिमल**—सुगन्ध; **ताहा**—वह; **जिनि'**—जीतकर; **कृष्ण-अङ्ग**—कृष्ण के दिव्य शरीर की; **गन्ध**—सुगन्ध; **व्यापे**—फैलती है; **चौद्द-भुवने**—चौदहो भुवनों में; **करे**—करती है; **सर्व आकर्षणे**—सब को आकर्षित; **नारी-गणेर**—स्त्रियों की; **आखि**—आँखें; **करे**—करती है **अन्ध**—अन्धी।

अनुवाद

"कृष्ण के शरीर की सुगन्ध कस्तूरी तथा नीलकमल के फूलों की सुगन्ध को पराजित करने वाली है। चौदहों लोकों में फैलकर यह हर एक को आकृष्ट करती है और समस्त स्त्रियों के नेत्रों को अन्धा बनाती है।

সখি হে, কৃষ্ণ-গন্ধ জগত্মাতায়
নারীর নাসাতে পশে, সর্ব-কাল তাহাঁ বৈসে, ।
কৃষ্ণ-পাশ ধরি' লঞা যায় ॥৯৩॥

সখি হে, কৃষ্ণ-গন্ধ জগত্মাতায়
নারীর নাসাতে পশে, সর্ব-কাল তাহাঁ বৈসে, ।
কৃষ্ণ-পাশ ধরি' লঞা যায় ॥ ৯৩॥

সখি হে—हे प्रिय सखी; **কৃষ্ণ-গন্ধ**—कृष्ण के शरीर की सुगन्ध; **জগত্ মাতায়**—सारे जगत् को मोहित करती है; **নারীর**—स्त्रियों के; **নাসাতে**—नथुनों में; **পশে**—प्रविष्ट होकर; **সর্ব-কাল**—सदैव; **তাহাঁ**—वहाँ; **বৈসে**—रहती है; **কৃষ্ণ-পাশ**—भगवान् कृष्ण के पास; **ধরি'**—पकड़कर; **লঞা যায়**—ले जाती है।

अनुवाद

"हे प्रिय सखी, कृष्ण के शरीर की सुगन्ध सारे जगत् को मोहित करती है। विशेषतया स्त्रियों के नथुनों में प्रविष्ट होकर यह वहीं पर रुक

जाती है। इस तरह यह उन्हें बन्दी बनाकर बलपूर्वक कृष्ण के पास ले आती है।

নেত্র-নাভি, বদন, কর-যুগ চরণ,
এই অষ্ট-পদ্ম কৃষ্ণ-অঙ্গে ।
কর্পূর-লিপ্ত কমল, তার যৈছে পরিমল,
সেই গন্ধ অষ্ট-পদ্ম-সঙ্গে ॥ ৯৪ ॥

নেত্র-নাভি, বদন, কর-যুগ চরণ,
এই অষ্ট-পদ্ম কৃষ্ণ-অঙ্গে ।
কর্পূর-লিপ্ত কমল, তার যৈছে পরিমল,
সেই গন্ধ অষ্ট-পদ্ম-সঙ্গে ॥ ৯৪ ॥

নেত্র—आँखें; **নাভি**—नाभि; **বদন**—मुख; **কর-যুগ**—हथेलियाँ; **চরণ**—चरण; **এই**—ये; **অষ্ট**—आठ; **পদ্ম**—कमल पुष्प; **কৃষ্ণ-অঙ্গে**—कृष्ण के शरीर में; **কর্পূর**—कपूर के साथ; **লিপ্ত**—लिप्त; **কমল**—कमल पुष्प; **তার**—उसके; **যৈছে**—जैसी; **পরিমল**—सुगन्ध; **সেই গন্ধ**—वह सुगन्ध; **অষ্ট-পদ্ম-সঙ্গে**—आठ कमल पुष्पों से सम्बन्धित।

अनुवाद

"कृष्ण की आँखें, नाभि तथा मुँह, हाथ तथा पैर—ये उनके शरीर पर आठ कमलपुष्पों के समान हैं। इन आठों कमलों से कपूर तथा कमल की मिली-जुली सुगन्ध निकलती है। यह सुगन्ध उनके शरीर से सम्बन्धित है।

হেম-কীলিত চন্দন, তাহা করি' ঘর্ষণ,
তাহে অগুরু, কুঙ্কুম, কস্তূরী ।
কর্পূর-সনে চর্চা অঙ্গে, পূর্ব অঙ্গের গন্ধ সঙ্গে,
মিলি' তারে যেন কৈল চুরি ॥ ৯৫ ॥

হেম-কীলিত চন্দন, তাহা করি' ঘর্ষণ,
তাহে অগুরু, কুঙ্কুম, কস্তূরী ।
কর্পূর-সনে চর্চা অঙ্গে, পূর্ব অঙ্গের গন্ধ সঙ্গে,
মিলি' তারে যেন কৈল চুরি ॥ ৯৫ ॥

हेम—सुवर्ण के साथ; **कीलित**—सुशोभित; **चन्दन**—श्वेत चन्दन; **ताहा**—वह; **करि'**—करके; **घर्षण**—घिसकर; **ताहे**—उसमें; **अगुरु**—अगरु की सुगन्ध; **कुङ्कुम**—कुंकुम; **कस्तूरी**—तथा कस्तूरी; **कर्पूर**—कपूर; **सने**—के साथ; **चर्चा**—लेप करके; **अङ्गे**—शरीर पर; **पूर्व**—पहले; **अङ्गेर**—शरीर की; **गन्ध**—सुगन्ध; **सङ्गे**—के साथ; **मिलि'**—मिलकर; **तारे**—वह; **ग्रेन**—जैसे; **कैल**—किया; **चुरि**—चोरी करना या आच्छादित करना।

अनुवाद

"जब चन्दन को अगुरु, कुंकुम, कस्तूरी तथा कपूर के साथ मिलाकर कृष्ण के शरीर पर लेप किया जाता है, तो यह कृष्ण की मूल शारीरिक सुगन्ध के साथ मिल जाता है और उसे आच्छादित करता प्रतीत होता है।

तात्पर्य

अन्य एक संस्करण में इस श्लोक की अन्तिम पंक्ति *कामदेवेर मन कैल चुरि* के रूप में भी पाई जाती है, जिसका अर्थ है, "इन सारी वस्तुओं की सुगन्ध कृष्ण के शरीर की पहले की सुगन्ध से मिल जाती है और कामदेव के मन को चुरा लेती है।"

हरे नारीर तनु-मन, नासा करे घूर्णन,
खसाय नीवि, छुटाय केश-बन्ध ।
करिया आगे बाउरी, नाचाय जगत्नारी,
हेन डाकातिया कृष्णाङ्ग-गन्ध ॥९६॥

हरे नारीर तनु-मन, नासा करे घूर्णन,
खसाय नीवि, छुटाय केश-बन्ध ।
करिया आगे बाउरी, नाचाय जगत् नारी,
हेन डाकातिया कृष्णाङ्ग-गन्ध ॥ ९६॥

हरे—मोहित करती है; **नारीर**—स्त्रियों के; **तनु-मन**—मन तथा शरीर; **नासा**—नथुने; **करे घूर्णन**—भ्रमित करती है; **खसाय**—शिथिल करती है; **नीवि**—कटिबन्ध; **छुटाय**—छोड़ती है; **केश-बन्ध**—केशों को; **करिया**—करके; **आगे**—सामने; **बाउरी**—बावरी स्त्री के समान; **नाचाय**—नचाती है; **जगत्-नारी**—जगत् की सारी स्त्रियों को; **हेन**—ऐसी; **डाकातिया**—डाकू; **कृष्ण-अङ्ग-गन्ध**—कृष्ण के शरीर की सुगन्ध।

अनुवाद

"कृष्ण के दिव्य शरीर की सुगन्ध इतनी आकर्षक है कि यह सारी

स्त्रियों के शरीरों तथा मनों को मोह लेती है। यह उनके नथुनों को भ्रमित करती है, उनके कटिबन्धों तथा केशों को शिथिल बनाती है और उन्हें उन्मत्त करती है। विश्वभर की स्त्रियाँ इसके प्रभाव में आ जाती हैं, इसीलिए कृष्ण के शरीर की सुगन्ध एक डाकू के समान है।

সেই গন্ধ-বশ নাসা, সদা করে গন্ধের আশা,
কভু পায়, কভু নাহি পায় ।
পাইলে পিয়া পেট ভরে, পিঙ পিঙ তবু করে,
না পাইলে তৃষ্ণায় মরি' যায় ॥ ৯৭ ॥

सेइ गन्ध-वश नासा, सदा करे गन्धेर आशा,
कभु पाय, कभु नाहि पाय ।
पाइले पिया पेट भरे, पिङ पिङ तबु करे,
ना पाइले तृष्णाय मरि' ग्राय ॥ ९७ ॥

सेइ—वह; **गन्ध-वश**—सुगन्ध के वश में; **नासा**—नथुने; **सदा**—सदैव; **करे**—करते हैं; **गन्धेर**—सुगन्ध के लिए; **आशा**—आशा; **कभु पाय**—कभी वे प्राप्त करते हैं; **कभु नाहि पाय**—कभी प्राप्त नहीं करते; **पाइले**—यदि पाते हैं; **पिया**—पान करते हैं; **पेट**—पेट; **भरे**—भरकर; **पिङ**—मुझे पीने दो; **पिङ**—मुझे पीने दो; **तबु**—फिर भी; **करे**—वे लालायित रहते हैं; **ना पाइले**—यदि वे नहीं पाते; **तृष्णाय**—प्यास के मारे; **मरि' ग्राय**—वे मरते हैं।

अनुवाद

"इसके पूर्ण प्रभाव में आकर नथुने इसके लिए निरन्तर लालायित रहते हैं, यद्यपि वे कभी इसे प्राप्त कर पाते है, तो कभी नहीं भी कर पाते। किन्तु जब वे इसे पाते हैं, तो जी भरकर पान करते हैं, यद्यपि वे और अधिक की चाह करते हैं। किन्तु यदि वे नहीं पाते, तो तृष्णा के मारे मर जाते हैं।

মদন-মোহন-নাট, পসারি গন্ধের হাট,
জগন্নারী-গ্রাহকে লোভায় ।
বিনা-মূল্যে দেয় গন্ধ, গন্ধ দিয়া করে অন্ধ,
ঘর যাইতে পথ নাহি পায়'' ॥ ৯৮ ॥

मदन-मोहन-नाट, पसारि गन्धेर हाट,
जगन्नारी-ग्राहके लोभाय ।
विना-मूल्ये देय गन्ध, गन्ध दिया करे अन्ध,
घर ग्राइते पथ नाहि पाय" ॥ ९८ ॥

मदन-मोहन-नाट—अभिनेता मदनमोहन; **पसारि**—दुकानदार; **गन्धेर हाट**—सुगन्ध की दुकान; **जगत्-नारी**—जगत् की स्त्रियों को; **ग्राहके**—ग्राहकों को; **लोभाय**—आकर्षित करती है; **विना-मूल्ये**—बिना मूल्य लिये; **देय**—वितरित करते हैं; **गन्ध**—सुगन्ध; **गन्ध दिया**—सुगन्ध देते हैं; **करे अन्ध**—ग्राहकों को अन्धा बना देती है; **घर ग्राइते**—घर वापस जाने का; **पथ**—मार्ग; **नाहि पाय**—ढूँढ नहीं पातीं।

अनुवाद

"अभिनेता मदनमोहन ने सुगन्ध की दूकान खोल रखी है और यह सुगन्ध विश्वभर की स्त्रियों को ग्राहक के रूप में आकृष्ट करती है। वे इस सुगन्ध को निःशुल्क बाँटते हैं, किन्तु यह सारी स्त्रियों को इस तरह अन्धा बना देती है कि वे घर लौटने का मार्ग तक ढूँढ नहीं पातीं।"

এই-মত গৌরহরি, গন্ধে কৈল মন চুরি,
ভৃঙ্গ-প্রায় ইতি-উতি ধায় ।
যায় বৃক্ষ-লতা-পাশে, কৃষ্ণ স্ফুরে—সেই আশে,
কৃষ্ণ না পায়, গন্ধ-মাত্র পায় ॥ ৯৯ ॥

এइ-मत गौरहरि, गन्धे कैल मन चुरि,
भृङ्ग-प्राय इति-उति धाय ।
ग्राय वृक्ष-लता-पाशे, कृष्ण स्फुरे—सेइ आशे,
कृष्ण ना पाय, गन्ध-मात्र पाय ॥ ९९ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गन्धे**—सुगन्ध से; **कैल**—किया; **मन चुरि**—मन चुरा लिया; **भृङ्ग-प्राय**—भौंरे की तरह; **इति-उति धाय**—इधर-उधर घूमते; **ग्राय**—जाते; **वृक्ष-लता-पाशे**—वृक्ष तथा लताओं के पास; **कृष्ण स्फुरे**—भगवान् कृष्ण प्रकट होंगे; **सेइ आशे**—उस आशा में; **कृष्ण ना पाय**—कृष्ण को प्राप्त न करके; **गन्ध-मात्र पाय**—केवल सुगन्ध प्राप्त करते।

अनुवाद

इस तरह कृष्ण के शरीर की सुगन्ध ने श्री चैतन्य महाप्रभु का मन चुरा

लिया, जिससे वे भौंरे की तरह इधर-उधर दौड़ने लगे। वे वृक्षों तथा लताओं के पास इस आशा से दौड़ जाते कि भगवान् कृष्ण प्रकट होंगे, किन्तु उनको केवल कृष्ण के शरीर की सुगन्ध ही प्राप्त हो पाती।

स्वरूप-रामानन्द गाय, प्रभु नाचे, सुख पाय,
एइ-मते प्रातः-काल हैल ।
स्वरूप-रामानन्द-राय, करि नाना उपाय,
महाप्रभुर बाह्य-स्फूर्ति कैल ॥ १००॥

स्वरूप-रामानन्द गाय, प्रभु नाचे, सुख पाय,
एइ-मते प्रातः-काल हैल ।
स्वरूप-रामानन्द-राय, करि नाना उपाय,
महाप्रभुर बाह्य-स्फूर्ति कैल ॥ १००॥

स्वरूप-रामानन्द गाय—स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय गाने लगे; **प्रभु नाचे**—श्री चैतन्य महाप्रभु नृत्य करने लगे; **सुख पाय**—सुख पाया; **एइ-मते**—इस प्रकार; **प्रातः-काल हैल**—प्रातःकाल हुआ; **स्वरूप-रामानन्द-राय**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय दोनों; **करि**—किये; **नाना**—विविध; **उपाय**—उपाय; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **बाह्य-स्फूर्ति कैल**—बाह्य चेतना जगाने के।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर तथा रामानन्द राय दोनों ही महाप्रभु के लिए गाने लगे और महाप्रभु नृत्य करने लगे। वे प्रातः होने तक सुख का आनन्द लेते रहे। तब महाप्रभु को दोनों पार्षदों ने महाप्रभु की बाह्य चेतना जगाने के लिए उपाय सोचा।

मातृ-भक्ति, प्रलापन, भित्त्ये मुख-घर्षण,
कृष्ण-गन्ध-स्फूर्त्ये दिव्य-नृत्य ।
एइ चारि-लीला-भेदे, गाइल एइ परिच्छेदे,
कृष्णदास रूप-गोसाञि-भृत्य ॥ १०१॥

मातृ-भक्ति, प्रलापन, भित्त्ये मुख-घर्षण,
कृष्ण-गन्ध-स्फूर्त्ये दिव्य-नृत्य ।

एइ चारि-लीला-भेदे, गाइल एइ परिच्छेदे,
कृष्णदास रूप-गोसाञि-भृत्य ॥ १०१ ॥

मातृ-भक्ति—उनकी मातृभक्ति; **प्रलापन**—प्रलाप के शब्द; **भित्त्ये**—दीवारों पर; **मुख-घर्षण**—मुख रगड़ना; **कृष्ण-गन्ध**—भगवान् कृष्ण की सुगन्ध; **स्फूर्त्ये**—प्राकट्य पर; **दिव्य-नृत्य**—दिव्य नृत्य; **एइ**—ये; **चारि**—चार; **लीला**—लीलाएँ; **भेदे**—विविध; **गाइल**—गायी हैं; **एइ परिच्छेदे**—इस अध्याय में; **कृष्णदास**—कृष्णदास कविराज; **रूप-गोसाञि-भृत्य**—श्रील रूप गोस्वामी का सेवक।

अनुवाद

इस तरह श्रील रूप गोस्वामी का दास मैं, कृष्णदास, ने इस अध्याय में महाप्रभु की चार प्रकार की लीलाओं का गान किया है—महाप्रभु की मातृभक्ति, उनके पागलपन के शब्द, रात में दीवालों पर उनका मुख रगड़ना तथा भगवान् कृष्ण की सुगन्ध प्रकट होने पर उनका नृत्य करना।

तात्पर्य

कृष्णदास कविराज गोस्वामी कहते हैं कि श्रील रूप गोस्वामी के आशीर्वाद से वे श्री चैतन्य महाप्रभु की इन चार प्रकार की लीलाओं का वर्णन कर सके हैं। वास्तव में कृष्णदास कविराज श्रील रूप गोस्वामी के प्रत्यक्ष शिष्य नहीं थे, किन्तु उन्होंने श्रील रूप गोस्वामी द्वारा *भक्तिरसामृतसिन्धु* में दिये गये आदेशों का पालन किया था। इसीलिए वे उनके निर्देशानुसार कार्य कर सके और हर अध्याय में उन्होंने उनकी कृपा के लिए प्रार्थना की है।

এই-মত মহাপ্রভু পাঞা চেতন ।
স্নান করি' কৈল জগন্নাথ-দরশন ॥ ১০২॥

एइ-मत महाप्रभु पाञा चेतन ।
स्नान करि' कैल जगन्नाथ-दरशन ॥ १०२ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पाञा चेतन**—चेतना पाई; **स्नान करि'**—स्नान करने के बाद; **कैल जगन्नाथ-दरशन**—भगवान् जगन्नाथ का दर्शन किया।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु को फिर से बाह्य चेतना आ गई। तब उन्होंने स्नान किया और वे भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने गये।

অলৌকিক কৃষ্ণ-লীলা, দিব্য-শক্তি তার ।
তর্কের গোচর নহে চরিত্র যাহার ॥ ১০৩ ॥

अलौकिक कृष्ण-लीला, दिव्य-शक्ति तार ।
तर्केर गोचर नहे चरित्र ग्राहार ॥ १०३ ॥

अलौकिक—असामान्य; **कृष्ण-लीला**—भगवान् कृष्ण की लीलाएँ; **दिव्य-शक्ति**—दिव्य शक्ति; **तार**—उसकी; **तर्केर**—तर्क; **गोचर**—की परिधि में; **नहे**—नहीं हैं; **चरित्र**—चरित्र; **ग्राहार**—जिसका।

अनुवाद

भगवान् कृष्ण की लीलाएँ अलौकिक तथा दिव्य शक्ति से ओतप्रोत हैं। ऐसी लीलाओं की विशेषता है कि वे तर्क की परिधि में नहीं आतीं।

এই প্রেম সদা জাগে যাহার অন্তরে ।
পণ্ডিতেহ তার চেষ্টা বুঝিতে না পারে ॥ ১০৪ ॥

एइ प्रेम सदा जागे ग्राहार अन्तरे ।
पण्डितेह तार चेष्टा बुझिते ना पारे ॥ १०४ ॥

एइ—यह; **प्रेम**—भगवत्प्रेम; **सदा**—सदैव; **जागे**—जाग्रत होता है; **ग्राहार**—जिसका; **अन्तरे**—हृदय में; **पण्डितेह**—विद्वान पण्डित भी; **तार**—उसके; **चेष्टा**—कार्यकलाप; **बुझिते**—समझ; **ना पारे**—नहीं सकता।

अनुवाद

जब किसी के हृदय में कृष्ण का दिव्य प्रेम जागृत होता है, तब बड़े से बड़ा विद्वान भी उस व्यक्ति के कार्यकलापों को नहीं समझ सकता।

ধন্যস্যায়ং নবঃ প্রেমা যস্যোন্মীলতি চেতসি ।
অন্তর্বাণীভিরপ্যস্য মুদ্রা সুষ্ঠু সু-দুর্গমা ॥ ১০৫ ॥

धन्यस्यायं नवः प्रेमा यस्योन्मीलति चेतसि ।
अन्तर्वाणीभिरप्यस्य मुद्रा सुष्ठु सु-दुर्गमा ॥ १०५ ॥

धन्यस्य—उस सद्भागी व्यक्ति को; **अयम्**—यह; **नवः**—नया; **प्रेमा**—भगवत्प्रेम; **यस्य**—जिसका; **उन्मीलति**—प्रकट होता है; **चेतसि**—हृदय में; **अन्तः-वाणीभिः**—शास्त्रों

में प्रवीण व्यक्ति द्वारा; **अपि**—भी; **अस्य**—उसके; **मुद्रा**—लक्षण; **सुष्ठु**—अत्यधिक; **सु-दुर्गमा**—समझना मुश्किल।

अनुवाद

"जिस महान् व्यक्ति के हृदय में भगवत्प्रेम का उदय हुआ हो, उसके कार्यों तथा लक्षणों को बड़े से बड़ा विद्वान भी नहीं समझ सकता।"

तात्पर्य

यह श्लोक *भक्तिरसामृतसिन्धु* (१.४.१७) से उद्धृत है।

অলৌকিক প্রভুর 'চেষ্টা', 'প্রলাপ' শুনিয়া ।
তর্ক না করিহ, শুন বিশ্বাস করিয়া ॥১০৬॥

अलौकिक प्रभुर 'चेष्टा', 'प्रलाप' शुनिया ।
तर्क ना करिह, शुन विश्वास करिया ॥ १०६ ॥

अलौकिक—असामान्य; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **चेष्टा**—लीलाएँ; **प्रलाप**—उन्मत्त की तरह बोलना; **शुनिया**—सुनना; **तर्क**—अनावश्यक तर्क; **ना करिह**—न करें; **शुन**—केवल सुनें; **विश्वास करिया**—पूर्ण श्रद्धा के साथ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के कार्यकलाप, विशेषतया उन्मत्त की तरह उनका बोलना निस्सन्देह असामान्य हैं। अतएव जो भी इन लीलाओं को सुने, उसे चाहिए कि संसारी तर्क न करे। उसे इन लीलाओं का पूरी श्रद्धापूर्वक श्रवण मात्र करना चाहिए।

ইহার সত্যত্বে প্রমাণ শ্রী-ভাগবতে ।
শ্রী-রাধার প্রেম-প্রলাপ 'ভ্রমর-গীতা'তে ॥১০৭॥

इहार सत्यत्वे प्रमाण श्री-भागवते ।
श्री-राधार प्रेम-प्रलाप 'भ्रमर-गीता'ते ॥ १०७ ॥

इहार—इन बातों की; **सत्यत्वे**—सत्यता का; **प्रमाण**—प्रमाण; **श्री-भागवते**—श्रीमद्भागवत में; **श्री-राधार**—श्रीमती राधारानी का; **प्रेम-प्रलाप**—प्रेमावेश में प्रलाप करना; **भ्रमर-गीताते**—भ्रमर गीत नामक विभाग में।

अनुवाद

इन बातों के सत्य होने की प्रामाणिकता 'श्रीमद्भागवत' में प्राप्त है। दशम दसवें के 'भ्रमर गीत' नामक अध्याय में श्रीमती राधारानी कृष्ण के प्रेमावेश में उन्मत्त जैसी बातें करती हैं।

तात्पर्य

जब उद्धव गोपियों के लिए सन्देश लेकर मथुरा से आये, तब गोपियाँ कृष्ण के विषय में बातें करने लगीं और क्रन्दन करने लगीं। तब श्रीमती राधारानी ने एक भौंरा देखा और उसे उद्धव का दूत या उनका अथवा कृष्ण का कोई अतिप्रिय व्यक्ति समझकर उससे उन्मत्त की भाँति बातें करने लगीं। ये श्लोक इस प्रकार हैं (भागवत १०.४७.१२-२१) :

मधुप कितवबन्धो मा स्पृशांघ्रिं सपत्न्याः
कुचविलुलितमालाकुंकुमश्मश्रुभिर्नः ।
वहतु मधुपतिस्तन्मानिनीनां प्रसादं
यदुसदसि विडम्ब्यं यस्य दूतस्त्वमीदृक ॥

"हे भौंरे, तुम उद्धव तथा कृष्ण के अत्यन्त चतुर मित्र हो। लोगों का पादस्पर्श करने में तुम अत्यन्त पटु हो, किन्तु मैं इस भुलावे में आने वाली नहीं हूँ। ऐसा लगता है कि तुम कृष्ण की किसी सखी के स्तनों पर बैठकर आये हो, क्योंकि तुम्हारी मूच्छों पर कुंकुम चूर्ण लगा है। अब मथुरा में कृष्ण अपनी युवती सखियों की चापलूसी में लगे हैं। अब तो वे मथुरावासियों के मित्र कहे जा सकते हैं, इसलिए उन्हें अब वृन्दावनवासियों की कोई सहायता नहीं चाहिए। उन्हें हम गोपियों को तुष्ट करने का कोई कारण नहीं दिखता। चूँकि तुम उस जैसे व्यक्ति के दूत हो, अतएव यहाँ पर तुम्हारी उपस्थिति से क्या लाभ है? निश्चय ही इस सभा में तुम्हारी उपस्थिति से कृष्ण लज्जित होंगे।"

आखिर कृष्ण ने गोपियों का किस तरह अनादर किया कि वे अपने मनों से उन्हें निकाल रही हैं? इसका उत्तर नीचे दिया जाता है :

सकृदधरसुधां स्वां मोहिनीं पाययित्वा
सुमनस इव सद्यस्तत्यजेऽस्मान् भवादृक्।

परिचरति कथं तत्पादपद्मं तु पद्मा
ह्यपि बत हृतचेता उत्तमश्लोकजल्पैः ॥

"अब कृष्ण हमें अपने अधरों का मोहक अमृत नहीं देते, उसे अब वे मथुरा की स्त्रियों को देते हैं। कृष्ण हमारे मनों को प्रत्यक्ष रूप से आकृष्ट करते हैं, किन्तु वे तुम भौंरे जैसे ही हैं, क्योंकि वे एक सुन्दर फूल का संग छोड़कर दूसरे निकृष्ट फूल पर चले जाते हैं। कृष्ण ने हमारे साथ ऐसा ही व्यवहार किया है। मेरी समझ में नहीं आता कि लक्ष्मीजी उनके चरणकमलों को छोड़ने के स्थान पर उनकी निरन्तर सेवा में क्यों लगी हुई हैं। स्पष्ट है कि वे कृष्ण के झूठे शब्दों पर विश्वास करती हैं। किन्तु हम गोपियाँ लक्ष्मीजी जैसी बुद्धिहीना नहीं हैं।"

भौंरे का मधुर गीत सुनकर तथा यह पहचानकर कि मेरे सन्तोष के लिए ही यह कृष्ण का गुणगान कर रहा है, एक गोपी ने उत्तर दिया :

किमिह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वं यदूनाम्
अधिपतिमगृहाणां अग्रतो नः पुराणम्।
विजयसखसखीनां गीयतां तत्प्रसङ्गः
क्षपितकुचरुजस्ते कल्पयन्तीष्टमिष्टाः ॥

"हे भौंरे, कृष्ण का यहाँ कोई आवास नहीं है, किन्तु हम उन्हें यदुपति (यदुकुल के राजा) के रूप में जानती हैं। हम उन्हें भलीभाँति जानती हैं, अतएव हम उनके विषय में और अधिक गीत सुनने की इच्छुक नहीं हैं। अच्छा हो कि तुम ये गीत उनको सुनाओ, जो अब कृष्ण को अति प्रिय हैं। मथुरा की स्त्रियों को अब उनके द्वारा आलिंगित होने का अवसर मिला है। वे अब उनकी प्रियाएँ हैं, इसलिए अब वे उनके वक्षस्थलों की जलन को शान्त कर चुके हैं। यदि तुम वहाँ जाकर उन भाग्यशालिनी स्त्रियों के समक्ष अपने गीत गाओगे, तो वे अत्यन्त प्रसन्न होंगी और तुम्हारा आदर करेंगी।"

दिवि भुवि च रसायां काः स्त्रियस्तद्दुरापाः
कपटरुचिरहासभ्रूविजृम्भस्य याः स्युः।
चरणरज उपास्ते यस्त भूतिर्वयं का
अपि च कृपणपक्षे ह्युत्तमश्लोकशब्दः ॥

"हे मधुसंग्राहक, हम गोपियों को न देखकर कृष्ण अत्यन्त दुःखी होंगे। निश्चय

ही वे हमारी लीलाओं की स्मृतियों से खिन्न होंगे। इसलिए उन्होंने हम लोगों को तुष्ट करने के लिए तुम्हें दूत बनाकर भेजा है। तुम हमसे मत बोलो। तीनों लोकों में—स्वर्ग, मध्य तथा अधोलोकों में—जहाँ मृत्यु अनिवार्य है, कृष्ण को सारी स्त्रियाँ उपलब्ध हैं, क्योंकि उनकी वक्र भौंहे अत्यन्त आकर्षक हैं। इतना ही नहीं, लक्ष्मीजी सदैव अत्यन्त श्रद्धापूर्वक उनकी सेवा करती रहती हैं। उनकी तुलना में हम नगण्य हैं। निस्सन्देह, हम कुछ भी नहीं हैं। यद्यपि कृष्ण अत्यन्त चतुर हैं, किन्तु साथ ही अत्यन्त दानी भी हैं। तुम उनसे कहना कि अभागे व्यक्तियों के प्रति दयालुता के लिए उनकी प्रशंसा की जाती है और इसीलिए वे उत्तमश्लोक कहलाते हैं।"

विसृज शिरसि पादं वेद्म्यहं चाटुकारै
रनुनयविदुषस्तेऽभ्येत्य दौत्यैर्मुकुन्दात्।
स्वकृत इह विसृष्टापत्यपत्यन्यलोका
व्यसृजदकृतचेताः किं नु सन्धेयमस्मिन्॥

"तुम मेरे पैरों पर इसलिए गुनगुना रहे हो कि तुम्हारे विगत अपराध क्षमा कर दिये जाँय। कृपा करके मेरे पाँवों से दूर हो जाओ! मैं जानती हूँ कि मुकुन्द ने तुम्हें यह सिखाकर भेजा है कि तुम मधुर चापलूसी भरे वचन कहो और उनके दूत का कार्य करो। हे भौंरे, ये निश्चय ही कुछ कुटिल चालें हैं, जिन्हें मैं भलीभाँति समझती हूँ। यह कृष्ण का अपराध है। मैंने जो कुछ कहा है उसे कृष्ण से मत कहना, यद्यपि मैं जानती हूँ कि तुम अत्यन्त ईर्ष्यालु हो। हम गोपियों ने अपने पति, पुत्र तथा वे सारे धार्मिक सिद्धान्त, जिनसे अच्छा जन्म मिल सकता है, त्याग दिये हैं और अब हमारे पास कृष्ण की सेवा करने के अतिरिक्त कोई दूसरा कार्य नहीं है। फिर भी, कृष्ण ने अपने मन को वश में करके हम सबों को आसानी से भुला दिया है। अतएव अब उनके विषय में अधिक मत कहो। हमें अपना सम्बन्ध भूल जाने दो।"

मृगयुरिव कपीन्द्रं विव्यधे लुब्धधर्मा
स्त्रियमकृतविरूपां स्त्रीजितः कामयानाम्।
बलिमपि बलिमत्त्वावेष्टयद्ध्वांक्षवद्यस्
तदलमसितसख्यै र्दुस्त्यजस्तत्कथार्थः॥

"हे भौंरे, जब हम कृष्ण के विगत जन्मों का स्मरण करती हैं, तो हम उनसे अत्यधिक भयभीत हो उठती हैं। रामचन्द्र का अवतार लेकर, उन्होंने शिकारी जैसा कार्य किया और अन्यायपूर्वक अपने मित्र बालि को मार डाला। कामार्त शूर्पणखा रामचन्द्र की इच्छा पूरी करने आई, किन्तु वे सीतादेवी में इतने अनुरक्त थे कि उन्होंने शूर्पणखा की नाक काट ली। वामनदेव का अवतार लेकर उन्होंने बलि महाराज को लूट लिया और उनकी सारी सम्पत्ति ले ली और उनकी पूजा स्वीकार करने के बहाने उन्हें धोखा दिया। वामन देव ने बलि महाराज को उसी तरह पकड़ लिया, जिस तरह कोई कौवे को पकड़ ले। हे भौंरे, ऐसे व्यक्ति से मित्रता रखना बहुत अच्छा नहीं है। मैं जानती हूँ कि जब कोई कृष्ण के विषय में बातें करने लगता है, तो उन्हें रोक पाना बहुत कठिन होता है, और मैं यह स्वीकार करती हूँ कि मुझमें उतनी शक्ति नहीं कि उनके विषय में बातें करना बन्द कर सकूँ।"

यदनुचरितलीलाकर्णपीयूषविप्रुट्
सकृददनविधूतद्वन्द्वधर्मा विनष्टाः।
सपदि गृहकुटुम्बं दीनमुत्सृज्य दीना
बहव इह विहङ्गा भिक्षुचर्यां चरन्ति॥

"कृष्णविषयक कथाएँ इतनी बलशालिनी हैं कि वे चारों पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष—को नष्ट कर देती हैं। जो भी अपने कानों के माध्यम से *कृष्णकथा* की एक छोटी-सी बूँद को भी पीता है, वह सारी भौतिक आसक्ति तथा ईर्ष्या से मुक्त हो जाता है। ऐसा व्यक्ति जीविका का कोई साधन न होते हुए पक्षी की तरह साधु बन जाता है और भिक्षा माँगकर जीवित रहता है। सामान्य पारिवारिक मामले उसके लिए कष्टप्रद बन जाते हैं और वह बिना आसक्ति के सहसा सब कुछ त्याग देता है। यद्यपि ऐसी विरक्ति उपयुक्त होती है, किन्तु स्त्री होने के कारण मैं इसे ग्रहण करने में असमर्थ हूँ।"

वयमृतमिव जिह्मव्याहृतं श्रद्दधानाः
कुलिकरुतमिवाज्ञाः कृष्णवध्वो हरिण्यः।
ददृशुरसकृदेतत्तन्नखस्पर्शतीव्र-
स्मररुज उपमन्त्रिन् भाण्यतामन्यवार्ता॥

"हे दूत, मैं उस मूर्ख पक्षी के तुल्य हूँ, जो शिकारी के मधुर संगीत को सुनता है और सरलतावश उस पर विश्वास करने से उसके हृदय को बेध दिया जाता है तथा सभी प्रकार के कष्ट सहने को वह बाध्य हो जाता है। चूँकि हमने कृष्ण के वचनों पर विश्वास किया है, इसलिए हमें अत्यधिक पीड़ा हुई है। निस्सन्देह, कृष्ण के नाखूनों के स्पर्श से हमारे मुख घायल हुए हैं। उन्होंने हमें कितनी पीड़ा पहुँचायी है! अतएव तुम उनकी कथा मत चलाओ। तुम कोई अन्य बात कहो।"

श्रीमती राधिका से ये सारी बातें सुनकर भौंरा चला गया, किन्तु वह फिर से लौटा। कुछ सोच-विचार के बाद गोपी ने कहा :

प्रियसख पुनरागाः प्रेयसा प्रेषितः किं
वरय किमनुरुन्धे माननीयोऽसिमेऽङ्ग।
नयसि कथमिहास्मान् दुस्त्यजद्वन्द्वपार्श्वं
सततमुरुसि सौम्य श्रीर्वधूः साकमास्ते॥

"तुम कृष्ण के अत्यन्त प्रिय मित्र हो और उनकी आज्ञा से तुम यहाँ फिर से आये हो। इसलिए तुम मेरे लिए पूज्य हो। हे दूतश्रेष्ठ, अब मुझसे कहो कि तुम क्या कहना चाहते हो? तुम्हें क्या चाहिए? कृष्ण माधुर्य प्रेम नहीं त्याग सकते, इसलिए मेरी समझ में तुम हमें लेने आये हो। किन्तु तुम ऐसा कैसे करोगे? हम जानती हैं कि इस समय कृष्ण के वक्षस्थल पर अनेक लक्ष्मियों का वास है और वे निरन्तर हमसे बढ़कर कृष्ण की सेवा कर रही हैं।"

भौंरे की भद्रता की प्रशंसा करते हुए वे परम हर्ष से बोलीं।

अपि बत मधुपूर्याम् आर्यपुत्रोऽधुनास्ते
स्मरति स पितृगेहान् सौम्य बन्धूंश्च गोपान्।
क्वचिदपि स कथा नः किंकरीणां गृणीते
भुजमगुरुसुगन्धं मूर्ध्न्यधास्यत् कदा नु॥

"अब कृष्ण वृन्दावन की गोपियों को भुलाकर मथुरा में गुरुकुल के भद्र व्यक्ति की तरह रह रहे हैं। किन्तु क्या वे अपने पिता नन्द महाराज के प्रिय घर का स्मरण नहीं करते? हम सभी उनकी स्वाभाविक दासियाँ हैं। क्या वे हम सबों का स्मरण नहीं करते? क्या वे कभी हमारे विषय में बातें करते हैं या वे हमें

पूरी तरह से भूल चुके हैं? क्या वे कभी हमें क्षमा करके एक बार फिर उन अगुरु से सुगन्धित अपने हाथों से हमारा स्पर्श करेंगे?"

महिषीर गीत येन 'दशमे'र शेषे ।
पण्डिते ना बुझे तार अर्थ-विशेषे ॥ १०८ ॥

महिषीर—रानियों के; **गीत**—गीत; **येन**—जैसे; **दशमेर**—दसवें स्कन्ध के; **शेषे**—अन्त में; **पण्डिते**—अत्यन्त विद्वान पण्डित; **ना**—नहीं; **बुझे**—समझते; **तार**—उसके; **अर्थ-विशेषे**—विशेष अर्थ को।

अनुवाद

श्रीमद्भागवत के दसवें स्कन्ध के अन्त में वर्णित द्वारका की रानियों के गीत विशेष अर्थपूर्ण हैं। उन्हें बड़े-बड़े पंडित भी नहीं समझ पाते।

तात्पर्य

ये गीत *श्रीमद्भागवत* के दशम स्कन्ध के नब्बेवें अध्याय के श्लोक १५-२४ के रूप में हैं।

कुररि विलपसि त्वं वीतनिद्रा न शेषे
स्वपिति जगति रात्र्याम् ईश्वरो गुप्तबोधः।
वयमिव सखि कच्चिदगाढनिर्भिन्नचेता
नलिननयन हासोदारलीलेक्षितेन॥

सारी रानियाँ निरन्तर कृष्ण के विषय में सोचती रहतीं। जलक्रीड़ा के बाद रानियों ने कहा, "हे प्रिय मित्र कुररी, अब कृष्ण सोये हुए हैं, किन्तु हम उनके कारण रातभर जागती रहती हैं। तुम हमें रात में जागी देखकर हम पर हँसती हो, किन्तु तुम क्यों नहीं सो रही? तुम कृष्ण के विचारों में डूबी जान पड़ती हो। क्या तुम भी कृष्ण की हँसी से बिंधी हुई हो? उनकी हँसी अत्यन्त मधुर है। जो ऐसे तीर से बिंधा हो, वह अत्यन्त भाग्यशाली है।"

नेत्रे निमीलयसिनक्तमदृष्टबन्धु-
स्त्वम् रोरवीषि करुणं बत चक्रवाकी।

दास्यं गता वयमिवाच्युतपादजुष्टां
किंवा स्रजं स्पृहयसे कबरेण वोढुम्॥

"हे चक्रवाकी, रात में तुम अपनी आँखें खोले रहती हो, क्योंकि तुम अपने मित्र को नहीं देख सकती। निस्सन्देह, तुम्हें अतीव कष्ट होता है। क्या तुम करुणावश रुदन करती हो या तुम कृष्ण का स्मरण करके उन्हें पकड़ने का प्रयास करती हो? कृष्ण के चरणकमलों का स्पर्श पाकर सारी रानियाँ अत्यन्त सुखी हैं। क्या तुम कृष्ण की माला अपने सिर पर धारण करना चाहती हो? हे चक्रवाकी, कृपया तुम इन प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर दो, जिससे हम समझ सकें।"

भो भोः सदा निष्टनसे उदन्वन्
अलब्धनिद्रोऽधिगत प्रजागरः।
किं वा मुकुन्दापहृतात्मलाञ्छनः
प्राप्तां दशां त्वं च गतो दुरत्ययाम्॥

"हे सागर, तुम्हें रात में शान्ति से सोने का अवसर नहीं मिल पाता। इसके बदले तुम सदैव जागे रहकर रोते रहते हो। तुम्हें यह वर मिला है और तुम्हारा हृदय हमारी ही तरह भग्न है। मुकुन्द का हमारे साथ केवल इतना ही कार्य है कि वे हमारे कुंकुम चिह्नों को पोंछ लेते हैं। हे सागर, तुम हमारे समान ही कष्ट पाते हो।"

त्वं यक्ष्मणा बलवतासि गृहीत इन्दो
क्षीणस्तमो न निजदीधितिभिः क्षिणोषि।
कच्चिन्मुकुन्दगदितानि यथा वयं त्वं
विस्मृत्य भोः स्थगितगीरुपलक्ष्यसे नः॥

"हे चन्द्रमा, ऐसा लगता है कि तुम्हें तीव्र ज्वर है, शायद यक्ष्मा है। निस्सन्देह, तुम्हारे तेज में अन्धकार को नष्ट करने की शक्ति नहीं है। क्या तुम कृष्ण का संगीत सुनकर पागल हो गये हो? क्या इसीलिए तुम मौन हो? तुम्हारा कष्ट देखकर हमें लगता है कि तुम हम में से एक हो।"

किं त्वाचरितमस्माभिर्मलयानिल तेऽप्रियम्।
गोविन्दापाङ्गनिर्भिन्ने हृदीरयसि नः स्मरन्॥

"हे मलय समीर, कृपा करके हमसे कहो कि हमने तुम्हें क्या हानि पहुँचाई

है। तुम हमारे हृदयों में इच्छाओं की ज्वाला क्यों भड़का रहे हो? हम तो गोविन्द की चितवन रूपी तीर से बिंधी हुई हैं, क्योंकि वे कामदेव के प्रभाव को जागृत करने की कला में निपुण हैं।"

मेघ श्रीमांस्त्वमसि दयितो यादवेन्द्रस्य नूनं
श्रीवत्साङ्कं वयमिव भवान् ध्यायति प्रेमबद्धः।
अत्युत्कण्ठः शवलहृदयोऽस्मद्विधो बाष्पधाराः
स्मृत्वा स्मृत्वा विसृजसि मुहुर्दुःखदस्तत्प्रसङ्गः॥

"हे प्रिय मेघ, हे कृष्ण के मित्र, क्या तुम हम रानियों की तरह, जो कि कृष्ण के प्रेम में जुड़ी हुई हैं, कृष्ण के वक्षस्थल के श्रीवत्स चिह्न के विषय में सोच रहे हो? शायद तुम कृष्ण की संगति का स्मरण करते हुए उनके ध्यान में मग्न हो, इसीलिए तुम दुःख के आँसू बहा रहे हो।"

प्रियरावपदानि भाषसे
मृतसञ्जीविकयानया गिरा।
करवाणि किमद्य ते प्रियं
वद मे वल्गितकण्ठ कोकिल॥

"हे प्रिय कोयल, तुम्हारी वाणी अत्यन्त मधुर है और अन्यों का अनुकरण करने में तुम अत्यन्त निपुण हो। तुम अपनी वाणी से मृत शरीर को भी उत्तेजित कर सकते हो। इसलिए रानियों से कहो कि उनका उत्तम व्यवहार ही उनका उचित कर्तव्य है।"

न चलसि न वदस्युदारबुद्धे
क्षितिधर चिन्तयसे महान्तमर्थम्।
अपिबत वसुदेवनन्दनाङ्घ्रिं
वयमिव कामयसे स्तनैर्विधर्तुम्॥

"हे वदान्य पर्वत, तुम अत्यन्त उदार तथा गम्भीर हो और कुछ महान् कार्य करने के विचार में खोये रहते हो। हमारी ही तरह तुमने अपने हृदय में वसुदेव पुत्र कृष्ण के चरणकमलों को धारण करने का व्रत ले रखा है।"

शुष्यद्ह्रदाः कर्शिता बत सिन्धु-पत्न्यः
सम्प्रत्यपास्तकमलश्रिय इष्टभर्तुः।

यद्वद्वयं मधुपतेः प्रणयावलोकम्
अप्राप्य मुष्टहृदयाः पुरुकर्षिताः स्म ॥

"हे सागरपत्नी नदियों, हम देखती हैं कि समुद्र तुम्हें सुख नहीं देता। इसीलिए तुम लगभग सूख गई हो और तुममें सुन्दर कमल विद्यमान नहीं हैं। वे कमल क्षीण हो गये हैं और धूप में भी सारे आनन्द से विहीन हैं। इसी तरह हम अभागी रानियों के हृदय भी सूख चुके हैं और हमारे शरीर क्षीण हो गये हैं, क्योंकि हम अब मधुपति के प्रेम से विहीन हैं। क्या तुम भी हमारी तरह शुष्क, सौन्दर्यविहीन हो, क्योंकि तुम कृष्ण की प्रेमभरी चितवन से वंचित हो?"

हंस स्वागतमास्यतां पिब पयो ब्रूह्यङ्गशौरेः कथां
दूतं त्वां नु विदाम कच्चिदजितः स्वस्त्यास्त उक्तं पुरा।
किंवा नश्चलसौहृदः स्मरति तं कस्माद् भजामो वयं
क्षौद्रालापयकामदं श्रियमृते सैवैकनिष्ठा स्त्रियाम् ॥

"हे हंस, तुम इतनी प्रसन्नतापूर्वक यहाँ आये हो! तुम्हारा स्वागत है। हमारे विचार से तुम सदैव कृष्ण के दूत बने रहते हो। अब तुम यह दूध पीते हुए हमें यह बताओ कि उनका सन्देश क्या है। क्या कृष्ण ने हमारे विषय में तुमसे कुछ कहा है? क्या हम तुमसे पूछ सकती हैं कि क्या कृष्ण सुखी हैं? हम यही जानना चाहती हैं। क्या वे हमारा स्मरण करते हैं? हम जानती हैं कि एकमात्र लक्ष्मीजी उनकी सेवा करती हैं। हम तो केवल उनकी दासियाँ हैं। भला हम उनकी पूजा कैसे कर सकती हैं, जो मधुर शब्द बोलते हैं, किन्तु कभी हमारी इच्छाएँ पूरी नहीं करते हैं?"

महाप्रभु-नित्यानन्द, दोँहार दासेर दास ।
याँरे कृपा करेन, तार हय इथे विश्वास ॥१०९॥

महाप्रभु-नित्यानन्द, दोंहार दासेर दास ।
ग्यारे कृपा करेन, तार हय इथे विश्वास ॥१०९॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द; **दोंहार दासेर दास**—मैं इन दोनों के दास का दास हूँ; **ग्यारे कृपा करेन**—यदि कोई उनकी कृपा प्राप्त करता है; **तार हय**—वह अवश्य रखता है; **इथे विश्वास**—इन बातों में श्रद्धा।

अनुवाद

यदि कोई व्यक्ति श्री चैतन्य महाप्रभु तथा नित्यानन्द प्रभु के दासों का दास बन जाता है और उनकी कृपा प्राप्त कर लेता है, तो वह इन सारी बातों पर विश्वास कर सकता है।

श्रद्धा करि, शुन इहा, शुनिते महा-सुख ।
खण्डिबे आध्यात्मिकादि कुतर्कादि-दुःख ॥ ११० ॥

श्रद्धा करि, शुन इहा, शुनिते महा-सुख ।
खण्डिबे आध्यात्मिकादि कुतर्कादि-दुःख ॥ ११० ॥

श्रद्धा करि—महान् श्रद्धा के साथ; **शुन**—सुनो; **इहा**—ये सब विषय; **शुनिते**—सुनना भी; **महा-सुख**—महान् आनन्द; **खण्डिबे**—वह नाश करेगा; **आध्यात्मिक-आदि**—शरीर, मन इत्यादि से प्राप्त कष्ट; **कुतर्क-आदि-दुःख**—तथा कुतर्क के प्रयोग से उत्पन्न दुःखदायक दशा।

अनुवाद

इन कथाओं को श्रद्धापूर्वक सुनने का प्रयास करो, क्योंकि इनके सुनने में भी परम आनन्द होता है। इसे सुनने से शरीर, मन तथा अन्य जीवों से सम्बन्धित सारे कष्ट नष्ट हो जायेंगे और उसी के साथ मिथ्या तर्कों का दुःख भी दूर हो जायेगा।

चैतन्य-चरितामृत—नित्य-नूतन ।
शुनिते शुनिते जुड़ाय हृदय-श्रवण ॥ १११ ॥

चैतन्य-चरितामृत—नित्य-नूतन ।
शुनिते शुनिते जुड़ाय हृदय-श्रवण ॥ १११ ॥

चैतन्य-चरितामृत—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **नित्य-नूतन**—नित्य नवीन; **शुनिते शुनिते**—सुनते रहने से; **जुड़ाय**—शान्त होते हैं; **हृदय-श्रवण**—कान तथा हृदय।

अनुवाद

श्री चैतन्य चरितामृत नित्य नवीन है। इसको बार-बार सुनने से मनुष्य के हृदय तथा कान शान्त होते हैं।

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ ११२॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे ग्यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ ११२॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—के चरणकमलों में; **ग्यार**—जिसकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन करते हैं; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए उनके चरणचिह्नों पर चलकर, मैं कृष्णदास, श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्यलीला के अन्तर्गत श्री चैतन्य महाप्रभु का अचिन्त्य व्यवहार शीर्षक उन्नीसवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।